संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 334
पृष्ठ 8
मंगलवार
25 अगस्त 2026
प्रात: संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित   Email : shaharsamta@gmail.com   Website : https://Shaharsamta.com   सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- इस मंदिर में भक्त ने...   विचार- प्रधानमंत्री मोदी के 'सप्तधारा' ...   खेल- सीडब्ल्यूजी पदकवीर लवप्रीत को...

राहुल गांधी पर सीएम योगी का तीखा हमला, बोले

देश को कोसना राहुल अपना अधिकार समझते हैं

लखनऊ,संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के मनु स्मृति वाले बयान की तीखी आलोचना करते हुए उनसे सवाल किया कि वह क्यों अर्बन नक्सलियों के हाथों भारत की वर्तमान पीढ़ी के भविष्य को खराब करना चाहते हैं? रायबरेली के सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के गढ़ में मनुस्मृति को लेकर उनके पुणे में दिये गये कथित बयान का जिक्र करते हुए योगी आदित्यनाथ ने यह भी कहा कि भारत को राहुल गांधी से व्यक्तिगत तौर पर कोई उम्मीद नहीं है लेकिन लोकसभा में आपके पास जो नेता प्रतिपक्ष का पद है उससे जरूर उम्मीद है। अपने सवालों को विस्तार देते हुए आदित्यनाथ ने कहा आप क्यों भारत की विरासत को बर्बाद करना

चाहते हैं, क्यों भारत के भविष्य के साथ खिलवाड़ करना चाहते हैं ? आपसे एक जिम्मेदार नेता प्रतिपक्ष के रूप में सकारात्मक भूमिका की अपेक्षा यह देश रखता था, लेकिन आपने उन भूमिकाओं को बर्बाद कर दिया। मुख्यमंत्री ने कहा आपने उन जिम्मेदारियों से अपने आपको पूरी तरह अलग कर दिया। अमेठी और रायबरेली इस परिवार को ढोता तो रहा, लेकिन इस क्षेत्र के सामने इस परिवार ने हमेशा पहचान का संकट खड़ा किया। आदित्यनाथ ने आरोप लगाया यहां के संस्थानों के नाम, यहां के स्मारकों के नाम, एक परिवार के नाम पर हो जाएं, इनको अच्छा लगता था, लेकिन राना बेनी माधव बख्श सिंह या किसी वीरा पासी के नाम पर आपने या आपके लोगों ने सोचा भी नहीं। आदित्यनाथ सोमवार को 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के अमर नायक, अवध केसरी राना बेनी माधव बख्श सिंह की 222 वीं जयंती पर रायबरेली में आयोजित भाव समर्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने 21 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से नवनिर्मित राना बेनी माधव बख्श सिंह स्मृति सभागार का लोकार्पण, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों व शहीदों के परिजनों का सम्मान तथा अवधा केसरी स्मारिका एवं विशेष आवरण (स्पेशल कवर) का विमोचन भी किया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को पुणे में कांग्रेस के युवा संपर्क कार्यक्रम छात्रों की गूंज में कहा था कि महिलाओं का अपना अस्तित्व है और उनकी पहचान को उनके पिता, पति या बेटों के अधीन नहीं रखा जाना चाहिए। उन्होंने मनुस्मृति के उस नियम को शर्मनाक बताया, जिसके अनुसार महिला को जीवन के हर चरण में पुरुष रिश्तेदारों के अधीन रहना चाहिए। आदित्यनाथ ने कहा मैं रायबरेली के सांसद राहुल गांधी के महाराष्ट्र में दिए एक बयान को पढ़ रहा था, जिसमें उन्होंने कहा कि महिलाएं मनु स्मृति के बंधन को तोड़कर अब बाहर आ जाएं। उन्होंने कहा राहुल जी, एक राहुल गांधी के रूप में आपसे यह देश बहुत अपेक्षा नहीं करता है, कोई अपेक्षा नहीं करता है, लेकिन भारत की संसद में, भारत की सर्वोच्च पंचायत में नेता प्रतिपक्ष के रूप में आप देश के लोकतंत्र के प्रति जवाबदेह बनते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राहुल मनु पर या राम पर या भारत की विरासत पर टिप्पणी करते हैं। उन्होंने कहा कि मनु को जानना है तो अथर्ववेद, सप्तपदी ब्राह्मण और मत्स्य पुराण पढ़िये, आपको सारी जानकारी मिल जाएगी। उन्होंने कहा कौन ऐसा व्यक्ति है जिसके जीवन में मां के रूप में या बहन के रूप में या पत्नी के रूप में या फिर बेटे के रूप में किसी महिला का संरक्षण उसे न प्राप्त होता हो? क्या कोई बेटी पिता के बगैर, क्या कोई बहन भाई के बगैर, क्या कोई पत्नी पति के बगैर और क्या कोई मां बेटे के बगैर अपने अस्तित्व को पूर्ण मानती है?

मॉस्को में पुतिन से मिले जयशंकर, दिया पीएम मोदी का खास संदेश, बोले

भारत-रूस आर्थिक सहयोग तेजी से बढ़ा

मॉस्को ,एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोमवार को मॉस्को में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। इस दौरान जयशंकर ने व्लादिमीर पुतिन को प्रधानमंत्री नरेंद्र का खास संदेश दिए। जयशंकर ने कहा, मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं देकर अपनी बात शुरू करना चाहता हूं। उन्होंने आपको देने के लिए मुझे एक व्यक्तिगत संदेश दिया है, जिसे मैं आपको सौंपना चाहता हूं। उन्होंने कहा, ष्हमने अंतर-सरकारी आयोग की बैठक की। मुझे लगता है कि कुल मिलाकर हमारे पास आपको बताने के लिए एक अच्छी रिपोर्ट है।ष जयशंकर ने कहा, ष्मुझे लगता है कि हमारा आर्थिक सहयोग, व्यापार, ऊर्जा, उर्वरक, परमाणु और अन्य क्षेत्रों में भी काफी प्रगति हुई है। मुझे इन सभी विषयों पर विस्तार से बात करने में खुशी होगी। एस

जयशंकर ने कहा, ष्कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि हमारा आर्थिक सहयोग काफी तेजी से बढ़ा है। प्रधानमंत्री मोदी एससीओ शिखर सम्मेलन में आपसे मिलने और फिर ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए भारत में आपका स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं।

अमरावती अस्पताल की एनआईसीयू में आग लगने से 3 शिशुओं की मौत

मुंबई,एजेंसी। महाराष्ट्र के अमरावती में एक सरकारी अस्पताल में भर्ती अपने बच्चों के स्वस्थ होने का इंतजार कर रहे माता-पिता एवं अन्य परिजन सोमवार तड़के अस्पताल के बाहर गहरी नींद में थे और उन्हें तनिक भी अंदाजा नहीं था कि कुछ ही देर में एनआईसीयू में आग लग जाएगी और वहां भर्ती शिशुओं की जान खतरे में पड़ जाएगी। महाराष्ट्र के अमरावती शहर में सोमवार तड़के एक सरकारी अस्पताल की नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई (एनआईसीयू) में आग लगने से तीन शिशुओं की मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने 'पीटीआई-वीडियो' को बताया कि जिला महिला अस्पताल की नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई (एनआईसीयू) में भीषण आग लग गई, जिससे कुछ नवजात शिशु काली राख से ढक गए और वार्डों में अफरा-तफरी मच गई। कुछ माता-पिता ने बताया कि सुरक्षाकर्मी और नर्सें बच्चों को बचाने के लिए धुएं से भरी देखभाल इकाइयों में तुरंत भागे। उन्होंने इस घटना के लिए अस्पताल प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया। अस्पताल में भर्ती कुछ बच्चों के परिजनों ने यह भी दावा किया कि वार्ड में पानी के छिड़काव की प्रणाली काम नहीं कर रही थी और आग लगते ही इसे तुरंत सक्रिय किया जाना चाहिए था। अधिकारियों के अनुसार, सोमवार तड़के करीब सवा तीन बजे अस्पताल की एनआईसीयू में आग लगी। इस इकाई में समय से पहले जन्मे, कम वजन वाले और गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं का इलाज किया जा रहा था। अमरावती के अचलपुर निवासी योगेश सावरकर ने बताया कि उनकी पत्नी और आठ दिन का बच्चा अस्पताल में भर्ती थे तथा जब आग लगी, उस समय वह अस्पताल की इमारत के बाहर सो रहे थे। सावरकर ने बताया कि उनका बच्चा अस्पताल की पहली मंजिल पर था। एक वार्ड में आग की लपटें फैलने पर वह ऊपर पहुंचे, अपने बच्चे को बचाया और उसे सुरक्षित नीचे ले आए। सावरकर और कुछ अन्य बच्चों के परिजनों ने बताया कि स्थिति बेहद गंभीर थी और वार्ड में भर्ती बच्चों के ऊपर तक आग फैल रही थी। सावरकर ने कहा, "मेरा बच्चा पहली मंजिल पर था और मैं खुद जाकर उसे नीचे लेकर आया। हालांकि, मैंने अस्पताल में अन्य बच्चों को काली राख से ढका देखा।" उन्होंने कहा कि सुरक्षा गार्ड सबसे पहले घटनास्थल पर पहुंचे और बच्चों को बचाना शुरू किया। उन्होंने एक नर्स को भी बच्चों की जान बचाने में मदद करते देखा। बच्चों के परिजनों ने इस त्रासदी के लिए अस्पताल प्रशासन को सीधे तौर पर जिम्मेदार ठहराया। परिजनों ने कहा कि उन्हें आग लगने की सही वजह का पता नहीं है, लेकिन उन्होंने वार्ड में भीषण आग लगी देखी, जिसके बाद बच्चों के माता-पिता और अस्पताल के कर्मचारियों में अफरा-तफरी मच गई।

भाजपा ने 'पेपर लीक' से ध्यान भटकाने के लिए मुद्दा उछाला : पवन खेड़ा

नयी दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस सांसद पवन खेड़ा ने सोमवार को अयोध्या में उत्तर प्रदेश कांग्रेस प्रमुख अजय राय के स्वागत कार्यक्रम के दौरान आयोजित मछली की दावत को लेकर हुए विवाद पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की आलोचना की। खेड़ा ने आरोप लगाया कि पेपर लीक जैसे मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए इस मामले को उछाला जा रहा है। इस विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए खेड़ा ने सवाल उठाया कि क्या कार्यक्रम में परोसे गए खाने पर चर्चा, अयोध्या में चंदे की कथित चोरी और पेपर लीक जैसे मुद्दों पर भारी पड़ सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि मछली परोसने में कुछ भी गलत नहीं है और तर्क दिया कि खान-पान की पसंद को राजनीतिक विवाद का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए। खेड़ा ने बताया कि अजय राय शाकाहारी हैं और कहा कि अगर वह शाकाहारी न भी होते, तो भी मछली खाने में कोई आपत्तिजनक बात नहीं थी। यह विवाद तब शुरू हुआ जब एक वीडियो सामने आया जिसमें अयोध्या के एक बैंक्वेट हॉल में मछली तैयार की जा रही थी।

बंबीहा गैंग पर अमित शाह का कड़ा प्रहार

मलेशिया से डिपोर्ट किए गए 3 कुख्यात गैंगस्टर

नयी दिल्ली एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार (24 अगस्त) को बताया कि बंबिहा गैंग से जुड़े तीन भगोड़े गैंगस्टरों को मलेशिया से डिपोर्ट किया गया है। इन पर जबरन वसूली, सीमा पार हथियारों की तस्करी और नशीले पदार्थोंकी तस्करी समेत कई अपराधों के आरोप हैं। उन्होंने कहा कि इन भगोड़ों – जसप्रीत सिंह, अजय सिंह और पवनदीप सिंह – को पकड़कर भारत लाया गया है। एक्स पर एक पोस्ट में शाह के ऑफिस ने कहा कि भारतीय एजेंसियों ने मलेशिया में तीन फरार भारतीय गैंगस्टर्स को पकड़ा, उन्हें भारत डिपोर्ट किया और पुलिस कस्टडी में भेज दिया। ये फरार अपराधी – जसप्रीत सिंह, अजय सिंह और पवनदीप सिंह – बंबीहा गैंग से जुड़े हैं और उन पर कई अपराधों का आरोप है, जिनमें रंगदारी, सीमा पार हथियारोंऔर नशीले पदार्थोंकी तस्करी, और लुधियाना में ग्रेनेड हमले की नाकाम कोशिश शामिल है। गृह मंत्री ने आगे कहा कि भारतीय

एजेंसियों ने अकेले 2026 में 51 कुख्यात अपराधियों को डिपोर्ट करने में मदद की है। पोस्ट में कहा गया मोदी जी के सुरक्षित भारत के विजन के तहत, हमारी एजेंसियों ने अकेले 2026 में 51 कुख्यात अपराधियों को डिपोर्ट करने में मदद की है।

इससे पहले मई में, सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (CBI) ने विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय के साथ मिलकर काम करते हुए, संयुक्त अरब अमीरात (UAE) से दो वॉन्टेड भगोड़ों को भारत वापस लाया। भारतीय और UAE अधिकारियों की मिली-जुली कोशिशों के बाद दोनों आरोपियों को 1 मई, 2026 को वापस लाया गया। कमलेश पारेख एक बड़े वित्तीय धोखाधड़ी मामले में वॉन्टेड थे, जिसमें स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के नेतृत्व वाले बैंकों के समूह को सैकड़ों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। जांचकर्ताओं के अनुसार, उन्होंने कंपनी के अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर, कथित तौर पर विदेशी व्यवसायों के एक नेटवर्क के जरिए बैंक फंड का गलत इस्तेमाल कियाय इस नेटवर्क में UAE में चल रहे कामकाज भी शामिल थे।

दावा- देश में चीनी की कोई कमी नहीं

नई दिल्ली,एजेंसी। देश में चीनी की बढ़ती कीमतों से परेशान उपभोक्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण खबर सामने आई है। उद्योग जगत की प्रमुख संस्था इंडियन शुगर एंड बायो-एनर्जी मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईएसएमएध्इस्मा) ने साफ किया है कि भारत में चीनी की कोई कमी नहीं है। आईएसएमए को उम्मीद है कि आने वाले दिनों में खुदरा चीनी की कीमतों में गिरावट आएगी, जिससे उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी। आईएसएमए के अध्यक्ष नीरज शिरगाओकर ने चीनी के दाम बढ़ने के पीछे के कारणों का विस्तार से खुलासा किया है। उन्होंने बताया कि कीमतों में वृद्धि मुख्य रूप से बाजार में सट्टेबाजी की गतिविधियों के कारण हुई है। इसके साथ ही, व्यापारियों द्वारा चीनी का अधिक भंडारण भी एक बड़ा कारण रहा है। इससे बाजार में कृत्रिम कमी का

माहौल बना। मौसम संबंधी चुनौतियों के कारण गन्ने की फसल प्रभावित हुई। इससे चीनी का कुल उत्पादन अनुमान से कम रहा। इन सभी कारकों ने मिलकर बाजार में अस्थायी दबाव पैदा किया। परिणामस्वरूप, चीनी की कीमतें ऊपर चढ़ गईं। आईएसएमए के अनुसार, चीनी की कीमतों में वृद्धि के पीछे कई प्रमुख कारण जिम्मेदार हैं। बाजार में जमाखोरी ने चीनी की मांग को कृत्रिम रूप से बढ़ाया है, जिससे दाम बढ़े। व्यापारियों द्वारा बड़ी मात्रा में चीनी का भंडारण करने से बाजार में आपूर्ति बाधित हुई। इसके अतिरिक्त, प्रतिकूल मौसम जैसे कि कम बारिश या अत्यधिक गर्मी ने गन्ने की फसल को नुकसान पहुंचाया। इससे चीनी मिलों को पर्याप्त गन्ना नहीं मिल पाया और उत्पादन प्रभावित हुआ। उद्योग संस्था आईएसएमए ने उपभोक्ताओं को जल्द राहत मिलने की उम्मीद जताई है। संस्था का मानना है कि बाजार में सट्टेबाजी और भंडारण की स्थिति में सुधार होगा।

सरकार को दी सख्त चेतावनी- छात्रों को लेकर न दोहराएं गलती-अभिजीत दीपके

नयी दिल्ली,एजेंसी। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके ने नोएडा में निजी कंपनियों के कर्मचारियों के विरोध प्रदर्शन के दौरान हुई पुलिस कार्रवाई को लेकर सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने आरोप लगाया कि अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाले लोगों के खिलाफ कानून का गलत इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। दीपके ने चेतावनी दी कि यदि नोएडा के मजदूरों के बाद छात्रों के साथ भी इसी तरह की कार्रवाई जारी रही तो इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। दीपके ने सोमवार को एक मीडिया रिपोर्ट साझा करते हुए नोएडा में हुए विरोध प्रदर्शन का मुद्दा उठाया। रिपोर्ट के मुताबिक, अप्रैल में करीब एक सप्ताह चले प्रदर्शन के दौरान लगभग 200 निजी कंपनियों के कर्मचारियों को पुलिस ने हिरासत में लिया था। रिपोर्ट में दावा किया गया कि कई प्रदर्शनकारियों को अदालत से जमानत मिलने से पहले लंबे समय तक जेल में रहना पड़ा। दीपके ने सवाल उठाया कि यदि प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं थे, तो इतनी लंबी हिरासत की जरूरत क्यों पड़ी। उन्होंने कहा कि नागरिकों को अपने अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण तरीके से आवाज उठाने का अधिकार है और कानून का इस्तेमाल उन्हें दबाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। दीपके ने एक जांच रिपोर्ट को रीपोस्ट करते हुए 'पाकिस्तान कनेक्शन का क्या हुआ?' सवाल भी उठाया। रिपोर्ट में प्रदर्शन के बाद मजदूरों की गिरफ्तारी और उनके खिलाफ की गई कानूनी कार्रवाई का जिक्र था।

उनके मुताबिक, अदालत ने कुछ मामलों में पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठाते हुए कहा कि पर्याप्त ठोस सबूत सामने नहीं रखे गए थे। हालांकि, उपलब्ध दावों और आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अलग-अलग मामलों के रिकॉर्ड से ही स्पष्ट हो सकती है।

नासिक कुंभ के बजट पर सुप्रीम कोर्ट जज की टिप्पणी, बोले-

0.1प्रतिशत पैसा शिक्षा को मिलता तो नहीं बंद होते 100-125 स्कूल

धुले,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस प्रसन्ना बी. वराले ने महाराष्ट्र में शिक्षा व्यवस्था और सरकारी स्कूलों के लिए बजट आवंटन को लेकर गंभीर चिंता जताई है। धुले जिले के एक हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने नासिक-त्र्यंबकेश्वर सिंहस्थ कुंभ मेले और बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स पर प्रस्तावित भारी खर्च का जिक्र करते हुए शिक्षा के लिए अधिक धन उपलब्ध कराने की जरूरत बताई। जस्टिस वराले ने कहा कि उन्हें विकास परियोजनाओं पर सरकार के खर्च से आपत्ति नहीं है, लेकिन शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरत को भी समान प्राथमिकता मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर कुंभ मेले के लिए प्रस्तावित हजारों करोड़ रुपये में से सिर्फ 0.1 प्रतिशत राशि भी शिक्षा पर खर्च

की जाती, तो महाराष्ट्र के करीब 100 से 125 मराठी माध्यम के स्कूलों को बंद होने से बचाया जा सकता था। जस्टिस वराले ने अपने संबोधन में क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने अपने छात्र जीवन का अनुभव साझा करते हुए बताया कि उन्होंने नगरपालिका और जिला परिषद के मराठी माध्यम के स्कूलों में 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की। उनके मुताबिक, क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्राप्त करने से उनके करियर में कोई बाधा नहीं आई। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में शिक्षा व्यक्ति की सोच को व्यापक बनाने में मदद करती है। उन्होंने संत ज्ञानेश्वर और कवि सुरेश भट का उल्लेख करते हुए मराठी भाषा से मिले सामाजिक और मानवीय मूल्यों की चर्चा की। जस्टिस वराले ने शिक्षा के लिए बजट आवंटन में कमी पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि छात्रों की संख्या और जरूरतें बढ़ने के बावजूद शिक्षा पर खर्च बढ़ाने के बजाय कई स्तरों पर बजट हिस्सेदारी कम हुई है। उन्होंने ग्रामीण और सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की स्थिति सुधारने की आवश्यकता बताई। उनके मुताबिक, स्कूलों में बेहतर भवन, तकनीकी सुविधाएं, स्वच्छता और अन्य जरूरी संसाधन उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकताओं में होना चाहिए।जस्टिस वराले धुले के उस हाई स्कूल में स्मार्ट क्लास के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुए थे, जहां उन्होंने अपने छात्र जीवन का कुछ समय बिताया था। इसी दौरान उन्होंने शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और सरकारी स्कूलों में निवेश बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया।

अवर अभियंता के बेटे को अगवा कर मांगी फिरौती, पुलिस ने तीन को किया गिरफ्तार

प्रयागराज। अंदावा में कार शोरूम के बाहर से रेलवे में तैनात अवर अभियंता के बेटे को अगवा कर 10 लाख रुपये की फिरौती मांगने के आरोप में धूमनगंज पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। अंदावा में कार शोरूम के बाहर से रेलवे में तैनात अवर अभियंता के बेटे को अगवा कर 10 लाख रुपये की फिरौती मांगने के आरोप में धूमनगंज पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने युवक को जबरन कार में बैठाकर उससे 21 हजार रुपये व सोने की चेन छीन ली थी।

मुंडेरा निवासी आरोपी शीबू उर्फ शुभम केसरवानी, महिला ग्राम निवासी आलोक कुमार, विकास भारतीया उर्फ डिग्गल के कब्जे पॉइंट 32 बोर पिस्टल, पॉइंट 315 बोर तमंचा और कारतूस बरामद किया है। एयरपोर्ट के चिरका मुंजाता गांजा निवासी शिवम सिंह रेलवे में अवर अभियंता हैं। बेटा शुभम सिंह 21 अगस्त की शाम दोस्त संग अंदावा के पास गया था। दोस्त को वाहन खरीदना था। इसी दौरान एक कार से कुछ लोग वहां पहुंचे और शुभम को जबरन कार में बैठाकर ले गए। विरोध पर आरोपियों ने तमंचे के बट से उसके साथ मारपीट की। कहा कि पहले के 1.42 लाख रुपये बकाया हैं, उन्हें दो। जब शुभम ने रुपये नहीं होने की बात कही तो उससे पिता को फोन कर ऑनलाइन रुपये मंगवाने के लिए कहा। इसके बाद उसे पीटते हुए कार से आगे ले गए। रास्ते में आरोपियों ने किसी व्यक्ति को फोन किया। इसके बाद उसे कौशाम्बी के संदीपनघाट के पास बुलाया। वहां एक व्यक्ति कार लेकर पहुंचा और शुभम को दूसरी कार में बैठा लिया गया। बाद में आरोपी उसे धूमनगंज क्षेत्र में देर रात नकदी और चेन छीनकर उसे छोड़कर फरार हो गए। घर पहुंचने के बाद शुभम ने परिजनों को घटना की जानकारी दी। तहरीर पर झूंसी पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। धूमनगंज थाना प्रभारी धनंजय पांडेय ने बताया कि ऑनलाइन गेमिंग से जुड़े करीब एक लाख रुपये के लेनदेन का विवाद था।

सरकारी नौकरी: पांच वर्ष में 94 लाख युवाओं ने आयोग से मांगी नौकरी, 58 हजार को मिली

प्रयागराज। अगले साल 2027 में यूपी का विधानसभा चुनाव होने जा रहा है। यूपी सरकार युवाओं को साधने में जुटी है। हालांकि, प्रयागराज समेत पूरे प्रदेश में युवा कहीं न कहीं यूपीपीएससी की कार्यप्रणाली से नाराज है। अगले साल 2027 में यूपी का विधानसभा चुनाव होने जा रहा है। यूपी सरकार युवाओं को साधने में जुटी है। हालांकि, प्रयागराज समेत पूरे प्रदेश में युवा कहीं न कहीं यूपीपीएससी की कार्यप्रणाली से नाराज है। पांच वर्ष में 94 लाख युवाओं ने आयोग में नौकरी के लिए आवेदन किया लेकिन कुल 58 हजार को ही रोजगार मिल सका।

ये आंकड़े आयोग ने खुद अपने वेबसाइट पर अपलोड किए हैं। वेबसाइट के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2022–24 के दौरान कुल 15,29,728 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से 13,29,728 अभ्यर्थी परीक्षाओं में पंजीकृत हुए। विभिन्न चयन प्रक्रियाओं के तहत 14,173 अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया, जबकि इस अवधि में 12,501 भर्तियां पूरी की गईं।

आयोग के पिछले पांच वर्षों के आंकड़ों पर नजर डालें तो प्रतियोगी परीक्षाओं में अभ्यर्थियों की बड़ी संख्या देखने को मिलती है। इस अवधि में कुल 94,38,310 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें 77,99,776 अभ्यर्थियों ने परीक्षाओं के लिए पंजीकरण कराया। चयन प्रक्रिया के अगले चरण में 81,447 अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। आयोग के आंकड़ों के मुताबिक पांच वर्षों में कुल 58,186 भर्तियां पूरी की गईं।

सपा और कांग्रेस पर बरसे केशव मौर्या, कहा–अखिलेश की पार्टी का भविष्य सैफई तक

प्रयागराज। सपा प्रमुख अखिलेश यादव के परिवारवाद के फायदे गिनाए जाने पर प्रयागराज पहुंचे डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने पलटवार किया। कहा कि एक समय था, जब उनके परिवार के ही पांच सांसद उनकी पार्टी में थे। आने वाले समय में हो सकता है कि सपा के पांच सांसद और पांच विधायक ही रह जाएं। उनकी पार्टी का भविष्य सैफई तक ही सीमित रह जाएगा। वंदे मातरम को लेकर छिड़े विवाद और कांग्रेस के बयान पर भी केशव ने जवाब दिया। कहा, फिलहाल कांग्रेस को रविंद्र नाथ टैगोर की विचारधारा को मानना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने वंदे मातरम के टुकड़े कर देश के टुकड़े किए। केशव ने कहा कि भाजपा की सरकार रहते देश और वंदे मातरम का विभाजन नहीं दिया जाएगा।

केशव ने बसपा सुप्रीमो मायावती के आर्थिक आधार पर आरक्षण को अनुचित बताने पर प्रतिक्रिया दी। कहा, उन्होंने किस परिप्रेक्ष्य में यह बात कही है, उन्हें नहीं मालूम है पर सरकार में जो आरक्षण दिया जा रहा है, वह आगे भी जारी रहेगा। संजय निषाद की निषाद समाज की विभिन्न जातियों को शेड्यूल कास्ट में शामिल करने की मांग पर केशव ने कहा कि मांग पुरानी है। सरकार के संज्ञान में है। प्रदेश के जर्जर स्कूलों का वीडियो बनाने पर एफआईआर दर्ज करने के सीएम के बयान का केशव ने समर्थन किया। दावा किया कि भाजपा सरकार में विद्यालयों की स्थिति बेहतर हुई है और उनका कायाकल्प किया गया है। कोई शिकायत होगी तो सरकार समाधान करेगी। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद ने प्रयागराज में जलभराव को लेकर अपने एक्स (ट्विटर) पोस्ट पर पूछे गए सवाल को दोहराया। कहा कि अगर समय रहते अधिकारियों ने कदम उठाए होते तो शहर की यह स्थिति नहीं होती। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में काफी विकास हुआ है। जलभराव से नागरिकों को हुई असुविधा के लिए सरकार की ओर से क्षमा मांगते हुए उन्होंने विश्वास दिलाया कि भविष्य में ट्रिपल इंजन की सरकार में ऐसी समस्या नहीं आएगी।

ट्रक में फंसी बाइक, 300 मीटर तक घिसटता गया युवक, मौत

प्रतापपुर–फूलपुर मार्ग पर करूआडीह गांव के सामने रविवार रात 10 बजे सड़क हादसे में बाइक सवार 19 वर्षीय युवक की मौत हो गई। टक्कर के बाद बाइक ट्रक में फंस गई और युवक भी उसके साथ करीब 300 मीटर तक घिसटता गया। चालक ट्रक लेकर भाग गया।पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। प्रतापपुर बाजार निवासी मृतक सौभाग्य केसरवानी (19) पुत्र राम बाबू परिवार का इकलौता बेटा था। पिता राम बाबू रिक्शा चलाते हैं। परिवार में मां बुधनी देवी और दो बहनें हैं। सौभाग्य रविवार रात करीब 10 बजे बाइक से प्रतापपुर से फूलपुर की ओर जा रहा था। करूआडीह गांव के सामने उसकी बाइक ट्रक की चपेट में आ गई। टक्कर के बाद बाइक ट्रक में फंस गई और युवक भी बाइक के साथ घसीटता चला गया। ट्रक चालक करीब 300 मीटर तक उसे घिसटता गया।

इसके बाद बाइक ट्रक से अलग हो गई। चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। हादसे की सूचना मिलते ही आसपास के लोगों में अफरातफरी मच गई।

गजब: एक फैसला ऐसा भी...पत्नी को 15 रुपये में बेचा, ब्रिटिश कोर्ट ने लगाई थी मुहर

प्रयागराज। औरतों को बेचने के किस्से तो सुनने को कई मिल जाएंगे। अदालत ने इसे जायज ठहराया हो, ऐसा विरला निर्णय ब्रिटिश कोर्ट ने दिया था। पति ने अपनी पत्नी को 15 रुपये में बेचा और तीन जजों की बेंच ने उस सौदे पर मुहर लगाई।

औरतों को बेचने के किस्से तो सुनने को कई मिल जाएंगे। अदालत ने इसे जायज ठहराया हो, ऐसा विरला निर्णय ब्रिटिश कोर्ट ने दिया था। पति ने अपनी पत्नी को 15 रुपये में बेचा और तीन जजों की बेंच ने उस सौदे पर मुहर लगाई। वर्ष 1809 का यह फैसला इलाहाबाद के विधि संग्रहालय में संरक्षित है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट का विधि संग्रहालय अपने आप में अनूठा है, जिसने ऐतिहासिक दुर्लभ न्यायिक दस्तावेजों व सांस्कृतिक सामग्रियों को संजोया है। ऐसे दस्तावेजों में से एक है पत्नी के बेचे जाने पर अंग्रेजी कोर्ट का निर्णय। 19वीं शताब्दी की शुरुआत में बंगाल में देवमती नाम की एक महिला को उसके पति ने गैर के हाथों 15 रुपये में बेच दिया था। बाद में देवमती की मां ने इसके खिलाफ कोर्ट में गुहार लगाई। बेटी को वापस कराने का मांग रखी।

जज जॉन हर्बर्ट हॉर्निक्टन, जेम्स और स्टीवर्ट की बेंच ने इसकी सुनवाई की। महिला का बयान हुआ, जिसमें उसने यह स्वीकार किया कि सौदा उसकी सहमति से हुआ। जजों ने इस मामले में धर्मगुरुओं

को शास्त्र के अनुसार अपनी सलाह देने को कहा, जिन्होंने कोर्ट को बताया कि महिला की बिक्री उसकी सहमति से हुई, इसलिए यह सौदा जायज है। इस पर कोर्ट ने मुहर लगा दी थी।

न्यायिक कार्यों से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि उस वक्त ब्रिटिश कोर्ट वित्तीय–व्यापारिक मामलों में ही ज्यादा दिलचस्पी लेती थी। दीवानी मामलों में समाज, धर्म–संप्रदाय से जुड़े विशिष्ट लोगों (जूरी) की सलाह पर निर्णय दिया करती थी। यह निर्णय दुर्लभ था, इसीलिए संरक्षित किया गया। जनता इसका अवलोकन कर सकती है।

कोर्ट नंबर 21 में आज भी देखी जा सकती जूरी बेंच

इलाहाबाद हाईकोर्ट की कोर्ट नंबर 21 में आज भी जूरी के बैठने का स्थान देखा जा सकता है। आजादी के बाद भी कई वर्षों से तक यह जूरी काम करती थी, जिसमें शहर के मानिंद लोग शामिल होते थे। सुनवाई के दौरान मौजूद रहते और बाद अपना फैसला कोर्ट के समक्ष रखते थे, जो कोर्ट के लिए मायने रखता था।

नानावटी केस के बाद खत्म कर दी गई जूरी बेंच

अपर महाधिवक्ता और केंद्र सरकार के पूर्व अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल अशोक मेहता बताते हैं कि जूरी फैक्ट और अदालत कानून के आधार पर निर्णय करती थी। 1956–57 में महाराष्ट्र में नानावटी केस के बाद जूरी बंद कर दी गई। इस केस में नौसेना अधिकारी केएम नानावटी ने अपनी पत्नी सिल्विया के प्रेमी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इसमें जूरी ने नानावटी को निर्दोष बताया लेकिन हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से उसे सजा हुई।

महिला को बेचे जाने और सही ठहराने का मामला एक नजरिये को प्रकट करता है। अंग्रेजी राज में महिलाओं को संपत्ति समझा जाता था। भारत में महिला और पुरुष में भेद नहीं है। आजादी के बाद ही भारतीय संविधान ने दोनों को मताधिकार दिए। जबकि ब्रिटेन ने इसे लागू करने में काफी वक्त लगाया। – अशोक मेहता अपर महाधिवक्ता एवं पूर्व अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल भारत सरकार

हाईकोर्ट: प्रशासनिक कार्यों से पहले न्यायिक काम निपटाएं अधिकारी, सुविधा पर निर्भर नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि यदि प्रशासनिक अधिकारियों को न्यायिक दायित्व सौंपा गया है तो उन्हें पहले न्यायिक मामलों का निस्तारण करना होगा। प्रशासनिक व्यस्तता के नाम पर न्यायिक कार्य को लंबे समय तक टाला नहीं जा सकता।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि यदि प्रशासनिक अधिकारियों को न्यायिक दायित्व सौंपा गया है तो उन्हें पहले न्यायिक मामलों का निस्तारण करना होगा। प्रशासनिक व्यस्तता के नाम पर न्यायिक कार्य को लंबे समय तक टाला नहीं जा सकता। न्यायिक कार्य निर्धारित अनुशासन और समय–सारणी के अनुसार प्राथमिकता से किया जाना चाहिए। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर और न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की पीठ ने अमर सिंह यादव की याचिका पर दिया है।

मामला माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण–पोषण एवं कल्याण अधिनियम, 2007 के तहत कानपुर नगर में लंबित प्रकरण से संबंधित है। सुनवाई के दौरान एसडीएम सदर, कानपुर नगर की ओर से दाखिल रिपोर्ट में बताया गया कि एक जुलाई से 21 जुलाई 2026 तक प्रशासनिक व्यस्तता के कारण मामले की सुनवाई नहीं हो सकी। इस पर हाईकोर्ट ने कड़ी आपत्ति जताई और कहा कि लगातार 21 दिनों तक प्रशासनिक कार्यों का हवाला देकर न्यायिक कार्य को रोकना उचित नहीं है। अदालत ने स्पष्ट किया कि न्यायिक दायित्व पीठासीन अधिकारी की सुविधा पर निर्भर नहीं हो सकता।

पीठ ने यह भी कहा कि प्रशासनिक अधिकारियों को न्यायिक जिम्मेदारियां सौंपना उचित व्यवस्था नहीं है। राज्य सरकार को सुझाव दिया कि ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए प्रशिक्षित और पेशेवर न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति पर विचार किया जाना चाहिए। मामले के शीघ्र निस्तारण के लिए हाईकोर्ट ने कानपुर नगर के संबंधित ट्रिब्यूनल को सप्ताह में तीन प्रभावी सुनवाई की तारीखें तय करने और आवश्यक आदेश पारित करने का निर्देश दिया।

अदालत ने अगली सुनवाई के लिए 15 सितंबर 2026 की तारीख तय करते हुए एसडीएम कानपुर नगर से स्थिति रिपोर्ट भी तलब की है। रजिस्ट्रार (अनुपालन) को आदेश की प्रति 24 घंटे के भीतर प्रमुख सचिव, समाज कल्याण विभाग और संबंधित एसडीएम तक पहुंचाने का निर्देश दिया गया है।

बच्चे की मर्जी ही नहीं, उसका उज्ज्वल भविष्य और कल्याण सर्वोपरि, कोर्ट ने की टिप्पणी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि अभिरक्षा तय करते समय बच्चे की इच्छा ही एकमात्र आधार नहीं हो सकती, उसका सर्वोत्तम कल्याण, सुरक्षा, शिक्षा और बेहतर भविष्य भी सर्वोपरि होता है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि अभिरक्षा तय करते समय बच्चे की इच्छा ही एकमात्र आधार नहीं हो सकती, उसका सर्वोत्तम कल्याण, सुरक्षा, शिक्षा और बेहतर भविष्य भी सर्वोपरि होता है। इस टिप्पणी संग कोर्ट ने आठ वर्षीय बच्ची की अभिरक्षा उसके पिता और सौतेली मां को सौंप दी। यह आदेश न्यायमूर्ति संदीप जैन की एकल पीठ ने एटा निवासी सौरभ की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर दिया है।

सौरभ की बेटी के जन्म के तुरंत बाद उनकी पत्नी की मौत हो गई थी। ऐसे में बच्ची एटा में अपने नाना–नानी के पास रह रही थी। सौरभ राजस्थान में जूनियर इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने याचिका दायर कर बच्ची की अभिरक्षा मांगी थी। आदेश पर बच्ची अदालत में उपस्थित हुई और उसने नाना–नानी के साथ ही रहने की इच्छा जताई। इस पर पिता ने कोर्ट को बताया कि पहली पत्नी की मौत के बाद उन्होंने 2025 में दूसरी शादी की थी। कोर्ट में दूसरी पत्नी ने बच्ची की पूरी देखभाल का आश्वासन दिया। स्थिर माहौल रू कोर्ट ने सुनवाई के दौरान पाया कि बच्ची के नाना–नानी की उम्र 65 से 67 वर्ष के बीच है और वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं। बच्ची का नाना–नानी से भावनात्मक जुड़ाव है, लेकिन आठ साल उम्र में वह अपने भविष्य के नफा–नुकसान को समझने में सक्षम नहीं है। ऐसे में कोर्ट ने माना कि माता–पिता बच्ची को बेहतर शिक्षा, सुरक्षा और एक स्थिर पारिवारिक माहौल देने के लिए अधिक उपयुक्त स्थिति में हैं। भावनात्मक जुड़ाव का सम्मानरू कोर्ट ने नाना–नानी के प्रति बच्ची के लगाव को देखते हुए उन्हें मुलाकात का अधिकार दिया है, ताकि रिश्ता बना रहे।

नवाबगंज में अपराध से अर्जित 15 करोड़ की संपत्ति कुर्क

अपराध के जरिये अर्जित संपत्ति के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में पुलिस ने गैंगस्टर मोहम्मद नब्बे उर्फ नईम उर्फ नजमे आलम की करीब 15 करोड़ रुपये की पांच अचल संपत्तियां कुर्क कर लीं। कुर्क संपत्तियों में मुहीउद्दीनपुर उपरहार स्थित न्यू राजधानी होटल भी शामिल है। नवाबगंज के थाना प्रभारी पंकज अवस्थी ने बताया कि 2022 में गैंगस्टर एक्ट के तहत दर्ज मामले में कार्रवाई की गई है। कुल 1282.5 वर्गमीटर क्षेत्रफल की इन संपत्तियों को पुलिस आयुक्त न्यायालय ने शुक्रवार को गैंगस्टर एक्ट के तहत कुर्क करने का आदेश दिया था। पुलिस के मुताबिक नवाबगंज थाने में दर्ज गैंगस्टर एक्ट के मुकदमे की विवेचना के दौरान सामने आया कि मो.नब्बे उर्फ नईम ने भय और दबंगई के बल पर लोगों को धमकाकर अपराध से अर्जित धन से संपत्तियां खरीदी थीं। इनमें कुछ संपत्तियां उसकी पत्नी के नाम दर्ज बताई गई हैं।

पुलिस आयुक्त न्यायालय में सुनवाई के दौरान पेश अभिलेखों और साक्ष्यों के आधार पर न्यायालय ने संपत्तियों को कुर्क करने का आदेश पारित किया था। आरोपी के खिलाफ नवाबगंज, शिवकुटी थाने में हत्या के प्रयास, बलवा, गैंगस्टर एक्ट, चोरी, धोखाधड़ी, कूटरचित दस्तावेज और पशु क्रूरता समेत विभिन्न धाराओं में प्राथमिकी है।

सिद्धांतवादी व्यक्तित्व : वी बी सिन्हा

शहर समता, प्रयागराज। सिविल कोर्ट के वरिष्ठतम अधिवक्ता 98 वर्षीय श्री वी० बी० सिन्हा के निधन के साथ ही सिविल न्यायालय ने 70 वर्ष के अनुभवी सिविल ज्ञान के कोष को खो दिया। वी0 बी0 सिन्हा जी का जन्म 26 जनवरी सन 1929 को बाँदा जिले के बरगढ ग्राम मे जमींदार परिवार में हुआ था। बचपन से ही अध्ययन में विषेष रूचि होने के कारण मात्र 19 वर्ष की आयु में इलाहाबाद विष्वविद्यालय से एल०एल०बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की, इसके पष्चात कुछ वर्षों तक ब्लाक डेवलपमेंट आफीसर के पद पर विलासपुर म०प्र० में नौकरी की।

स्वच्छन्द विचारों और कानून के प्रति विषेष रूचि होने के कारण नौकरी से त्यागपत्र देकर 1962 से इलाहाबाद सिविल न्यायालय में वकालत शुरू की।

उन्होने अपने जीवन में अध्ययन को विषेष महत्व दिया, वो सुबह कम से कम 4 घण्टें शाम को 4 घण्टें जरूर पढ़ते थे। पढ़ाई में किसी भी तरह की परिस्थितियाँ बाधक न ही बनती थी इसके परिणाम स्वरूप उन्हे सी0पी0सी0 सहित कई एक्ट कण्ठस्थ थे। कानून की हर बारीकियों को उन्होने गहन अध्ययन के द्वारा समझा और उनकी सत्तर वर्षों की तपस्या का परिणाम था कि उनका मस्तिष्क स्वयं कानून का एक ऐसा पुस्तकालय था जहाँ से सिविल का कोई भी ज्ञान अर्जित किया जा सकता था।

सत्यता और ईमानदारी उनके व्यवसाय के दो मजबूत स्तंभ हैं जिसके ऊपर उनकी ज्ञान की छत है। उनके विचार से किसी भी काम को पूरी सत्यता और ईमानदारी के साथ किया जाना चाहिए। यदि ये न हो तो ज्ञान अपना अस्तित्व खो देता है।

उनके विचार से अधिक से अधिक अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क आवष्यक है अतः स्वास्थ्य के प्रति बहुत सजग रहना चाहिए और इसी विचारों के कारण 75 वर्ष की अवस्था तक नियमित मार्निंगवाक तथा जून में एक माह तक पहड़ों की सैर करते थे जिसकी वजह से 97 वर्ष की आयु तक वी० बी० सिन्हा खड़े होकर चल सकते थे।

वो एक साहसी, निडर, दृढ़ प्रतिज्ञ एवं उच्च आदर्षों वाले व्यक्तित्व के स्वामी थे, जो हालातों के आगे कभी नही झुके।

97 साल की उम्र तक अपने 70 वर्षों की अटूट लगत से अर्जित सम्पूर्ण सिविल का ज्ञान और हजारों मुकदमों के अनुभवों और सिविल न्यायालय के लम्बे इतिहास को अपने अन्दर समेटे वो अपनी क्षीण हो रही शक्तियों के बावजूद धीमी गति से न्यायालय में आते थे और न्यायालय के प्रति अपनी आस्था और काम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते थे।

डबल डेकर बस से सूबेदारगंज को छिवकी से जोड़ने की तैयारी

प्रयागराज। डबल डेकर बसों को चलाने की तैयारी तेज हो गई है। इसी कड़ी में सूबेदारगंज को छिवकी से जोड़ने के लिए डबल डेकर बस चलाने की पुख्ता तैयारी कर ली गई है। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम (यूपी रोडवेज) पहली बार शहर के भीतर सिटी बस सेवा का संचालन करेगा।

प्रयाग डिपो की देखरेख में संचालित होने वाली इन डबल डेकर बसों का रूट निर्धारण सप्ताह भर के भीतर फाइनल हो जाएगा। हाल ही में पत्थर गिरजाघर से अलोपीबाग तक सफल ट्रायल किया जा चुका है। रोडवेज अधिकारियों के अनुसार, सब कुछ तय योजना के मुताबिक रहा तो इसी महीने 65 सीटों वाली इन आधुनिक बसों का संचालन शुरू हो जाएगा।

सुरक्षा और सुगमता को लेकर हो रहा मंथन

– शहर के भीतर डबल डेकर बस जैसी भारी–भरकम और ऊंची गाड़ियों के संचालन में किसी प्रकार की तकनीकी बाधा न आए, इसके लिए रोडवेज प्रशासन फूंक–फूंक कर कदम रख रहा है। ऐसे मार्गों का बारीकी से चयन किया जा रहा है जहां रेल अंडरब्रिज (आरयूबी), नीचे लटके विद्युत तार या पेड़ों की घनी और नीची डालें आड़े न आएं।

एयरपोर्ट से सिविल लाइंस होते हुए झूंसी रूट पर भी विचार

– सूबेदारगंज और छिवकी के बीच इस सेवा के शुरू होने से न केवल दैनिक यात्रियों को राहत मिलेगी, बल्कि रेलवे स्टेशनों के बीच आवागमन भी बेहद आसान हो जाएगा। इसके अलावा, परिवहन निगम की ओर से बम्हरौली एयरपोर्ट से झूंसी और शहर के कुछ अन्य महत्वपूर्ण मार्गों पर भी डबल डेकर बसों के संचालन को लेकर लगातार मंथन जारी है। आने वाले दिनों में इन रूटों पर भी लोगों को सौगात मिलने की पूरी उम्मीद है।

डबल डेकर बस के लिए रूट सर्वे चल रहा है। इसी सप्ताह रूट फाइनल होने की उम्मीद है। सूबेदारगंज से छिवकी रूट पर भी विचार चल रहा है। रविंद्र कुमार सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक, यूपी रोडवेज प्रयागराज रीजन।

लोगों को डूबने से बचाने के लिए घाटों पर 65 गोताखोरों का पहरा

प्रयागराज। गंगा और यमुना के जलस्तर में बढ़ोतरी की आशंका को देखते हुए प्रयागराज में जल पुलिस सक्रिय हो गई है। बाढ़ के संभावित खतरे और नदी में होने वाली घटनाओं को रोकने के लिए घाटों पर सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। जल पुलिस ने संगम समेत प्रमुख घाटों पर 65 गोताखोरों को तैनात किया है। यह संख्या आम दिनों में तैनात रहने वाले गोताखोरों से करीब दोगुनी है। इसके साथ ही सहायता के लिए पीएसी की एक कंपनी को भी मोर्चे पर लगाया गया है। ककरहा घाट, संगम, अरैल, रसूलाबाद, शृंगवेरपुर, दारागंज घाट, बलुआ घाट, गऊघाट, दशाश्वमेध घाट और रामघाट समेत प्रमुख घाटों पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है। पिछले दिनों नदी में कई लोगों के डूबने की घटनाओं को देखते हुए जल पुलिस ने एहतियात के तौर पर गोताखोरों की संख्या बढ़ाई है। जल पुलिस प्रभारी रविंद्र नाथ ने बताया कि जलस्तर बढ़ने की स्थिति में घाटों पर खतरा और बढ़ सकता है। ऐसे में किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए जल पुलिस की टीमें पूरी तरह सतर्क हैं।

कई घाटों पर दो–दो गोताखोर तैनात

आम दिनों में घाटों पर करीब 30 गोताखोर तैनात रहते थे, जबकि अब इनकी संख्या बढ़ाकर 65 कर दी गई है। इनमें अधिकतर गोताखोर निजी तौर पर रखे गए हैं। सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए कई घाटों पर एक–एक, जबकि प्रमुख और संवेदनशील घाटों पर दो–दो गोताखोर तैनात किए गए हैं।

बाढ़ और नदी में बचाव के लिए बरतें ये सावधानियां

– नदी और घाटों पर बढ़े जलस्तर को देखते हुए गहरे पानी में जाने से बचें।

– बैरिकेडिंग या पुलिस की ओर से प्रतिबंधित किए गए स्थानों पर न जाएं।

– तेज बहाव वाले पानी में उतरने या तैरने की कोशिश न करें।

– किसी व्यक्ति के डूबने पर खुद पानी में कूदने के बजाय पुलिस को बताएं

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़े धूमधाम से माँ कल्याणी योग समिति ने किया भव्य कांवड़ यात्रा का आयोजन

प्रयागराज। माँ कल्याणी योग समिति की ओर से श्रद्धा एवं उत्साह के साथ पावन कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। इस कांवड़ यात्रा का आयोजन मां कल्याणी देवी योग समिति, योग प्रशिक्षिका श्रीमती सीता शर्मा जी द्वारा किया गया सर्वप्रथम त्रिवेणी संगम पर कंवर संकल्प पूजन प्रयागराज पुरोहित द्वारा

सभी महिला सदस्य के कलश को संकल्पित कराया गया इसके उपरांत ई रिक्शा पर बजा आगे आगे बजता हुआ पीछे महिलाएं कंधे पर कंवर लिए हुए जल कलश के साथ शिव के भजन और बोल बम के नारे हैं, भोलेनाथ हमारे हैं, बाबा तेरे सहारे हैं, नारा लगाते हुए त्रिवेणी संगम से मनकामेश्वर महादेव इस पावन यात्रा में प्रमुख रूप से सावित्री शर्मा, मुस्कान शर्मा, चंदा शर्मा, सोनी खन्ना, विनीता पटेल, डॉक्टर शशि चौरसिया, रजनी टंडन, वीणा पटेल, राधिका सारस्वत, मंजू बहल, प्रिया बहल, मीनाक्षी टंडन, रूबी टंडन, अम्मा जी, पुष्पा गुप्ता, रंजना जी, मीनू मल्होत्रा, सीमा गुप्ता, मनीषा जी, कुसुम केसरवानी, मोनिका धवन, पूजा कुशवाहा, सुष्मिता शर्मा, रंजन जी तथा प्रभा मानिकचंद शर्मा जी सहित अनेक श्रद्धालु क्षेत्री महिलाएं उपस्थित रही,सभी भक्तों ने पूरे उत्साह और भक्तिभाव के साथ भजन–कीर्तन एवं नृत्य करते हुए कांवड़ यात्रा पूरी की। इस दौरान पूरा वातावरण भगवान शिव के जयकारों से भक्तिमय हो गया।

कांवड़ यात्रा के समापन पर सभी श्रद्धालु मनकामेश्वर मंदिर पहुंचे, जहां उन्होंने भगवान शिव को पवित्र जल अर्पित कर जलाभिषेक किया। सभी ने भगवान भोलेनाथ से सुख, शांति, समृद्धि एवं सभी के मंगल की कामना की।श्रद्धा, आस्था और भक्ति से परिपूर्ण यह कांवड़ यात्रा हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

पर्यावरण की हरियाली के बीच पत्रकार व समाजसेवी गुफरान सम्मानित

प्रयागराज। इलाहाबाद जन कल्याण समिति द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं समाजसेवा के क्षेत्र में कार्य करते हुए पत्रकार व समाजसेवी गुफरान को सम्मानित किया गया। समिति की विशेष पहल के तहत यह सम्मान प्रकृति और हरियाली के बीच प्रदान किया गया, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का संदेश भी दिया गया।

मथुरा में डीएपी की बड़ी खेप पहुंची, 91 समितियों को 2763 मीट्रिक टन खाद का आवंटन

किसानों को राहतः सहकारी समितियों पर डीएपी, यूरिया और फॉस्फेटिक उर्वरक का पर्याप्त स्टॉक

मथुरा,। खरीफ फसल के बीच किसानों के लिए राहत की खबर है। जनपद में इफको डीएपी की 2763 मीट्रिक टन की रैक पहुंच गई है। जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह के निर्देशन में इसका आवंटन कर उर्वरक बिक्री केंद्रों और सहकारी समितियों पर खाद भेजी जा रही है। रैक से 91 सहकारी समितियों एवं संस्थाओं को

डीएपी का आवंटन किया गया है। सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता अभिषेक कुमार मिश्र ने बताया कि 22 अगस्त को मथुरा जंक्शन स्थित रैक प्वाइंट पर इफको डीएपी की रैक प्राप्त हुई। अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर उर्वरक के प्रेषण की समीक्षा की और समितियों तक समय से खाद पहुंचाने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि रैक प्राप्त होने के बाद जनपद में डीएपी की पर्याप्त उपलब्धता हो गई है। किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार संबंधित क्षेत्र की सहकारी समिति से उर्वरक प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक सहकारी समिति पर यूरिया एवं फॉस्फेटिक उर्वरक का भी पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध बताया गया है।

रैक प्वाइंट के निरीक्षण के दौरान सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता अभिषेक कुमार मिश्र, अपर जिला सहकारी अधिकारी सदर गुलाम मुही, सहायक विकास अधिकारी (सहकारिता) सुरेंद्र सिंह तथा इफको के क्षेत्रीय प्रबंधक सतबीर सिंह मौजूद रहे।

नैनो डीएपी–नैनो यूरिया के प्रयोग की अपील

अपर जिला सहकारी अधिकारी सदर एवं इफको के क्षेत्रीय प्रबंधक ने किसानों से नैनो डीएपी और नैनो यूरिया का अधिकाधिक प्रयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि नैनो उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ावा देने से रासायनिक उर्वरकों के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी। समितियों पर नैनो डीएपी और नैनो यूरिया भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अन्तर्गत गंगानाथ झा परिसर में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गङ्गानाथ झा परिसर प्रयागराज में संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अन्तर्गत अन्तर्विद्यालय एवं गुरुकुल स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के कक्षा 9 से 12 के छात्रों हेतु अष्टाध्यायी कण्ठ पाठ प्रतियोगिता तथा अमरकोष कण्ठपाठ प्रतियोगिता, विद्यालयों के कक्षा 6 से 8 के छात्र–छात्राओं हेतु गीता कण्ठपाठ प्रतियोगिता तथा कक्षा 9 से 12 के प्रतिभागियों हेतु संक्षेप रामायण कण्ठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रयागराज के विभिन्न विद्यालयों एवं गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया। परिसर के पण्डित मदनमोहन मालवीय सभागार एवं गंगासभागार में आयोजित इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक मण्डल में परिसर के सहनिदेशक एवं दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. देवदत्त सरोदे, हस्तलिपि एवं पुरालेख विभागाध्यक्षा एवं विद्यालयीय प्रतियोगिताओं की अध्यक्षा प्रो. अपराजिता मिश्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सहायकाचार्य डॉ. तेज प्रकाश चतुर्वेदी के साथ राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज के संस्कृत अध्यापक डॉ. सालिगराम त्रिपाठी सम्मिलित रहे। प्रतियोगिताओं की अध्यक्षता परिसर के निदेशक (प्रभारी) प्रो. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय "मणि" द्वारा की गई। इस अवसर पर डॉ. तेज प्रकाश

चतुर्वेदी ने संस्कृत भाषा के प्रति विद्यार्थियों के अनुराग एवं समर्पण को अद्वितीय बताते हुए उनके प्रयासों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। उनके अनुसार प्रतिभागियों द्वारा किये गये प्रयास उनके संस्कृत ज्ञान का परिचायक बने हैं। डॉ. सालिगराम त्रिपाठी द्वारा छात्रों को संस्कृत भाषा की मधुरता एवं समृद्धता से परिचित कराया गया। इस अवसर पर प्रो. देवदत्त सरोदे ने संस्कृत भाषा की विशिष्टता से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित इन प्रतियोगिताओं के द्वारा संस्कृत अध्ययन को प्रेरित करने वाला अवसर बताया। प्रो. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय ने सभी प्रतिभागियों को उनके उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ दी। विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का संयोजन एवं संचालन डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी, सहायकाचार्य द्वारा किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं का संयोजन अंकित मिश्र द्वारा किया गया। संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों का प्रतियोगितावार विवरण इस प्रकार रहा– विद्यालयीय कक्षा 6 से 8 हेतु गीता कण्ठ पाठ प्रतियोगिता में नैन्सी शुक्ला एवं साक्षी को प्रथम स्थान, निष्ठा एवं आंशी को द्वितीय स्थान तथा सिद्धि सहाय को तृतीय स्थान तथा अभीष्ट शुक्ल, कुमुद कुमारी एवं काव्यांजलि द्विवेदी को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। विद्यालयीय कक्षा 9 से 12 संवर्ग में संक्षेप रामायण प्रतियोगिता में शिवानी द्विवेदी ने प्रथम, उन्नति यादव एवं वेद ऋचा ने द्वितीय स्थान तथा मीनाक्षी पाण्डेय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार सुनिधि त्रिपाठी, सलोनी एवं अंशिका श्रीवास्तव को प्राप्त हुआ। गुरुकुल कक्षा 9 से 12 संवर्ग हेतु आयोजित अमरकोष कण्ठ पाठ प्रतियोगिता में गणेश शुक्ल को प्रथम, खुशी शुक्ला को द्वितीय, आकांक्षा को तृतीय तथा रंजीत तिवारी, आयुष्मान, मयंक त्रिपाठी को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी वर्ग हेतु आयोजित अष्टाध्यायी कण्ठ पाठ प्रतियोगिता में अभिनव एवं अर्पित को प्रथम स्थान, नैतिक पाण्डेय को द्वितीय स्थान, मारुत को तृतीय स्थान एवं राजा, सुप्रीता तिवारी तथा जयहिन्द को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। परिसर के संगणक विशेषज्ञ एवं जनसम्पर्क अधिकारी राजेशकान्त तिवारी ने बताया कि इन समस्त विजयी प्रतिभागियों को संस्कृत सप्ताह के समापन कार्यक्रम में सम्मानित किया जायेगा। इस अवसर पर डॉ. अंजनी कुमार पुण्डरीक, डॉ. शुभश्री दास, डॉ. मोनाली दास सहित परिसरीय अन्य अधिकारी, कर्मचारीगण एवं छात्र–छात्राएँ समुपस्थित रहे।

राही विकास समिति के शानदार कवि सम्मेलन में झूम उठे दर्शक

मैं तो जला हूं, किसी को जलाया तो नहीं है, मैं तो जला बस, रोशनी के लिए- अध्यक्ष रवीन्द्र कुशवाहा

प्रयागराज। राही विकास समिति द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में एक कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन सामुदायिक विवाह घर ककरहा घाट मीरापुर प्रयाग शवराज में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री श्री 1008 आचार्य स्वामी कौशल्यानंद गिरी, टीना मां एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता ललित कला अकादमी के सदस्य विख्यात कवि कलाकार रवीन्द्र कुशवाहा ने की और संरक्षक दिनेश सिंह एवं विशिष्ट अतिथि मधु श्रीवास्तव अंतर्राष्ट्रीय न्यायिक मानवाधिकार संरक्षण जिला अध्यक्ष मौजूद रहीं व राजेश खरे पूर्व कार्यकारिणी अध्यक्ष हाईकोर्ट बार एसोसिएशन उपस्थित रहे इस अवसर पर पौधारोपण एवं कविता पाठ का आयोजन हुआ। संस्था के अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार श्रीवास्तव व सच्ची मधुसूदन निषाद ने मुख्य अतिथि एवं सभी अतिथियों का माल्यार्पण अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह से स्वागत किया। कवि सम्मेलन का संचालन पंडित राकेश मालवीय मुस्कान ने किया और कवि सम्मेलन की शुरुआत

अन्नपूर्णा मालवीय के सरस्वती वंदना के साथ शुरुआत हुई, उजड़े दयार को भी वो आबाद लिख गया मरने का एक नया वह अंदाज लिख गया मनमोहन सिंह तन्हा ने सुनाया, यह वह सरजमी जिसकी दुनिया दीवानी है जिसमें जिसका गुलशन है वादियों में पानी है शंभू नाथ श्रीवास्तव ने शानदार कविता पढ़ी, ऐसा दे हुनर की ग़म खुशी से उछल पड़े जो मैं गुदगुदाऊ तो पत्थर भी हंस पड़े डॉ योगेंद्र कुमार मिश्रा विश्वबंधु ने पढ़ तालिया बटोरी, अपनी कविता धर्म सनातन हो शिला सर्व धर्म आधार मिले जगदीश कौर ने शानदार कविता पड़ीं, जगरानी मां का लाल था जिसने तुम्हें यह सूरत दिया शरत चंद्र श्रीवास्तव सरल ने पढ़ी, फांसी के फंदो को चूमा उनकी याद करें भारत मां की जय बोले मिलकर फरियाद करें पंडित राकेश मालवीय मुस्कान की रचना रही। अध्यक्षता कर रहे कवि रवीन्द्र कुशवाहा ने सुनाया मैं तो जला हूं किसी को जलाया तो नहीं है मैं तो जला बसघ रोशनी के लिए सुना तालियां बटोरी अन्य कवियों में झांसी से राजेश तिवारी मक्खन, प्रयागराज से इम्नियाज अहमद ग़ाजी, अजय मालवीय, सुभाषिनी, शैलेंद्र जय, शिवम त्रिपाठी आदि सभी कवियों की शानदार रचनाएं सुन दर्शकदीर्घा तालियों की गड़गड़ाहट से भर उठा।

रसोइयों की सेवाभावना से नन्हे विद्यार्थियों को मिल रहा पोषण : विधायक पूरन प्रकाश

मथुरा। लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर स्थित जुपिटर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री पोषण योजना के तहत कार्यरत मिड–डे मील रसोइयों का सम्मान किया। इस दौरान प्रदेश के 3.54 लाख रसोइयों के लिए कैशलेस चिकित्सा कार्ड वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का सजीव प्रसारण रविवार को मथुरा कलेक्ट्रेट सभागार सहित जनपद की सभी तहसीलों में किया गया। जिला प्रशासन एवं बेसिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद स्तरीय रसोइया सम्मान समारोह एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। मुख्य अतिथि बलदेव विधायक पूरन प्रकाश ने 13 रसोइयों मछला, ज्ञानवती, ममता, योगेन्द्र कुमार, बसंती देवी, कमलेश, हसीना, इंद्रा देवी, रामबेटी, सीता कुमारी, डोरी लाल, सकुनात और समीना को बढ़े हुए मानदेय के चेक, आयुष्मान कार्ड एवं उपहार भेंट कर सम्मानित किया। विधायक पूरन प्रकाश ने कहा कि परिषदीय विद्यालयों के बच्चों की बेहतर सेहत, पोषण और नियमित

उपस्थिति सुनिश्चित करने में रसोइयों की भूमिका महत्वपूर्ण है। वे सेवाभाव के साथ अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। मुख्य विकास अधिकारी डॉ. पूजा गुप्ता और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रतन कीर्ति ने रसोइयों से संवाद कर उनके अनुभव जाने और उनका उत्साहवर्धन किया। बीएसए ने बताया कि शासन के निर्देश पर लखनऊ के कार्यक्रम का सजीव प्रसारण जनपद मुख्यालय एवं सभी तहसीलों में जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में कराया गया। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी गिरिराज सिंह, राकेश कुमार, दिनेश कुमार त्रिपाठी, बुद्धसेन सिंह, कौशल कुमार, जिला समन्वयक अतुल पाठक, राहुल फोगाट, विक्रांत कुमार, आशीष भदौरिया, प्रगति मिश्रा, अंजुल शर्मा, स्टेट रिसोर्स ग्रुप के अमित कुमार अद्भुत, शिव कुमार, दिव्या मिश्रा सहित एआरपी, शिक्षक और बड़ी संख्या में रसोइया मौजूद रहे।

मेह बनी है नाशिनी

(छप्पय)

बैठ पात पर धूप पी रही पानी जिससे।
देव तुल्य वह वृक्ष नहीं कुछ कहता उससे।
एक जगह हो खड़ा सहारा सबका बनके।
रख सेवा का भाव भूख हरता है सबके।
आँगन की तुलसी बने फुलवारी बन द्वार की।
हवनकुण्ड में भी रहे राही बन हरि–राह की।।

उमड़–घुमड़ कर मेघ गगन में जब आते हैं।
सुन जंगल की बात अचानक रुक जाते हैं।
सिसक सिसक कर वृक्ष ढूँढते साथी अपने।
कल तक थे जो साथ आज हैं वह सब सपने।
देख जलद को क्रोध में लगी चमकने दामिनी।
सूर्य गगन में छुप गए मेह बनी है नाशिनी।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

चंद्रबदनी परिसर में आयोजित हुई भारतीय ज्ञान परम्परा पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

चन्द्रबदनी। आज श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, परिसर चन्द्रबदनी (नैखरी) में परिसर निदेशक डॉ महंथ मौर्य की अध्यक्षता में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अखिल भारतीय शिक्षा समागम–2026 के अंतर्गत "भारतीय ज्ञान परंपरा (भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में)" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषाओं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन पर विमर्श करना रहा।

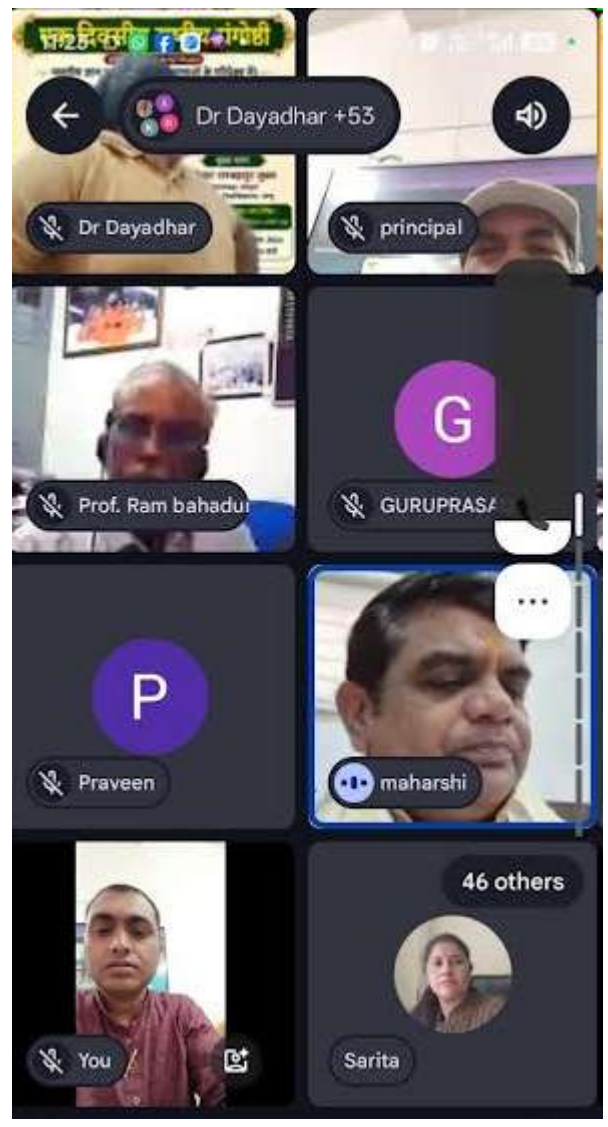

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इसके पश्चात् कार्यक्रम संयोजक डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल (असिस्टेंट प्रोफेसर,संस्कृत विभाग) द्वारा संगोष्ठी की रूपरेखा एवं विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया।

परिसर के प्राचार्य द्वारा अतिथियों का स्वागत करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व तथा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इसकी उपयोगिता पर विचार व्यक्त किए गए।

कार्यक्रम के सचिव डॉ. दयाधर दीक्षित (असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग) ने संगोष्ठी के आयोजन की पृष्ठभूमि एवं उद्देश्यों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर शिवशंकर मिश्र, कुलपति, पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) ने अपने संबोधन में भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापकता और उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय भाषाएं केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और जीवन–दृष्टि की संवाहक हैं।

मुख्य वक्ता प्रोफेसर रामबहादुर शुक्ल, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों पर विस्तार से विचार रखते हुए भारतीय भाषाओं में निहित ज्ञान–संपदा के संरक्षण, अध्ययन एवं नई पीढ़ी तक उसके हस्तांतरण की आवश्यकता पर बल दिया गया। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा और समकालीन समाज से जोड़ने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम सह–सचिव सुश्री वन्दना(असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग) ने अपने संबोधन में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय भाषाओं के संरक्षण को वर्तमान पीढ़ी के लिए आवश्यक बताते हुए इनके व्यापक प्रचार–प्रसार पर बल दिया।

संगोष्ठी में विश्वविद्यालय एवं परिसर के शिक्षकगण, शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे और शोध–पत्र प्रस्तुतियों एवं विषयगत विमर्श में सक्रिय सहभागिता की गई। तकनीकी सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने भारतीय भाषाओं में निहित ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, लोक परंपराओं, शिक्षा पद्धतियों तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समकालीन संदर्भ जैसे विविध पक्षों पर अपने शोधपरक शोधपत्र .प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. गुरु प्रसाद थपलियाल(असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने सभी अतिथियों, वक्ताओं, शोध–पत्र वाचकों, आयोजकों, शिक्षकों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी का आयोजन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय भाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा इसे समकालीन शैक्षिक संदर्भों से जोड़ने की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल रहा।

सम्पादकीय.....

अभी जीतने को आसमां और भी है

भारत जब स्वतंत्र हुआ था, तब देश की सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी स्थिति इतनी कमजोर थी कि अंतरिक्ष अनुसंधान जैसी अवधारणा केवल एक स्वप्न लगती थी। उस समय बुनियादी ढांचे का अभाव, सीमित संसाधन और गरीबी जैसी परिस्थितियां थीं, जहां भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मूलभूत सवाल ही सबसे बड़े थे लेकिन इतिहास गवाह है कि भारत ने विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए वैज्ञानिक क्षमता, दूरदर्शी नेतृत्व और अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर अंतरिक्ष अनुसंधान के ऐसे झंडे गाड़े, जिन्होंने पूरी दुनिया को चकित कर दिया। भारत की अंतरिक्ष यात्रा का सफर 1960 के दशक में बहुत ही साधारण प्रयोगों से शुरू हुआ था। एक समय ऐसा था, जब उपग्रहों और उपकरणों को बैलगाडियों और साइकिलों पर ढोया जाता था लेकिन भारतीय वैज्ञानिकों ने कभी हार नहीं मानी। धीरे–धीरे उस छोटे से बीज ने वृक्ष का रूप लिया और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी 'इसरो' का नाम दुनिया के सबसे सशक्त अंतरिक्ष संगठनों में शुमार हो गया। 23 अगस्त, 2023 को भारत ने अपने चंद्रयान–3 मिशन की सफलता के साथ वह ऐतिहासिक कारनामा कर दिखाया, जिसने अंतरिक्ष की दुनिया में स्वर्णाक्षरों से भारत का नाम अंकित कर दिया। उस दिन भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला और चंद्रमा की सतह पर उतरने वाला चौथा देश बना। इसी ऐतिहासिक उपलब्धि को याद करते हुए भारत अब हर साल 23 अगस्त को 'नैशनल स्पेस डे' यानी 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाता है। इस बार इस दिवस की थीम है 'विकसित भारत की ओर रूनवाचार, सहयोग और वैश्विक अंतरिक्ष नेतृत्व की आकांक्षा', जो भारत की अंतरिक्ष यात्रा को केवल उपलब्धियों के उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक नवाचार, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक नेतृत्व की व्यापक आकांक्षा के रूप में प्रस्तुत करती है। भारत का पहला कदम अंतरिक्ष में 1975 में उपग्रह आर्यभट्ट के प्रक्षेपण से हुआ था। यह भारत के लिए न केवल वैज्ञानिक महत्व का क्षण था बल्कि इसने एक नवयुग की नींव रखी। उसके बाद इसरो ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। भारत ने न केवल अपने उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए, बल्कि कई देशों के उपग्रहों को भी प्रक्षेपित करके 'स्पेस डिप्लोमेसी' का नया अध्याय रचा। भारत का पहला चंद्र मिशन 'चंद्रयान–1' 2008 में लांच किया गया। उस मिशन ने साबित कर दिया कि भारतीय वैज्ञानिक किसी भी बड़ी चुनौती को स्वीकार कर सकते हैं। चंद्रयान–1 ने चंद्रमा की सतह पर पानी के अणुओं के अस्तित्व की पुष्टि की, जो अब तक की सबसे बड़ी वैज्ञानिक खोजों में से एक है। इसरो की यही वैज्ञानिक जिज्ञासा और दूरदघ्शता भारत को मंगल तक भी ले गई। 2013 में जब इसरो ने अपने सीमित संसाधनों के बावजूद मात्र 450 करोड़ रुपए की लागत से मंगलयान मिशन को लांच किया और 2014 में मंगल की कक्षा में प्रवेश कराया तो पूरी दुनिया ने अवाक होकर भारत की क्षमता को स्वीकार किया। भारत पहला ऐसा देश बन गया, जिसने अपने पहले ही प्रयास में मंगल तक पहुंचने का कीर्तिमान स्थापित किया। मंगलयान दुनिया का सबसे किफायती मंगल मिशन साबित हुआ। भारत ने उसके बाद चंद्रयान–2 मिशन से एक और ऐतिहासिक प्रयास किया। हालांकि लैंडर विक्रम चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक उतर नहीं पाया और अंतिम क्षणों में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, फिर भी ऑबटर अब भी सक्रिय है और चंद्रमा के बारे में नई–नई जानकारियां भेज रहा है। चंद्रयान–3 ने वही अधूरा सपना पूरा किया। 14 जुलाई, 2023 को प्रक्षेपित चंद्रयान–3 मिशन 23 अगस्त को इतिहास रचते हुए दक्षिणी ध्रुव पर उतरा। यह वह क्षेत्र है, जिसे कोई देश छू नहीं पाया था। चंद्रयान–3 के रोवर 'प्रज्ञान' और लैंडर 'विक्रम' ने चंद्रमा की सतह से कई महत्वपूर्ण डाटा जुटाए, जिनसे भविष्य में चंद्रमा पर मानव बस्ती बसाने जैसी योजनाओं को बल मिलेगा। आज जब भारत गगनयान मिशन की तैयारी कर रहा है, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष यात्री पहली बार स्वदेशी तकनीक से अंतरिक्ष की यात्रा करेंगे, तो यह यात्रा एक नई छलांग होगी। भविष्य की ओर देखें तो इसरो अब चंद्रयान–4 और चंद्रयान–5 जैसे नए मिशनों पर भी कार्य कर रहा है, साथ ही सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य–एल1 के बाद शुक्र ग्रह पर संभावित अभियान और अंतरिक्ष स्टेशन की परिकल्पना जैसे प्रोजेक्ट भारत को अंतरिक्ष विज्ञान की अगली पंक्ति में ले जाएंगे।

प्रधानमंत्री मोदी के 'सप्तधारा' दृष्टिकोण में निहित 'हर घर हीलर' अभियान

संगीता मित्तल

80वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से अपने

संदेश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बार अपनी विचारधारा 'सप्तधारा' में देश के मैन्युफैक्चरिंग सैक्टर से लेकर कृषि, टैक्नोलॉजी, गति यानी कनैक्टिविटी, डिफैंस, ग्रीन एवं ब्लू इकॉनोमी और सातवें स्तंभ के तौर पर सॉफ्ट स्किल्स का विशेष उल्लेख किया। यह देश के समावेशी विकास में भौतिक एवं आध्यात्मिक संतुलन साधने के लिए प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण का अनूठा संगम है। सप्तधारा की सातवीं धारा में सॉफ्ट स्किल्स, मैडिटेशन, योग और हीलिंग सीधे व्यक्ति की आंतरिक चेतना और संवेदनशीलता के पोषण पर जोर देती है। जब किसी घर में कोई व्यक्ति उपचारक बन जाता है तो वह न केवल खुद को स्वस्थ रखता है, बल्कि अपने पूरे परिवार के लिए सुरक्षा कवच साबित हो सकता है। आध्यात्मिक दक्षता के साथ 'हर घर हीलर' मिशन सप्तधारा की अहम कड़ी है, जो एक ऐसे भारत की कल्पना करती है, जहां हर नागरिक शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से सशक्त हो। होशियारपुर की अमृतम घाटी में मेरे एकांतवास में वसंत की एक सुहानी सुबह थी। जैसे ही मैं शांत स्थिर होकर बैठी, मेरे भीतर एक गहरी हलचल उठी–इतना कुछ होने के बावजूद भी हम कष्ट क्यों सहते हैं? आंतरिक शांति दूर क्यों महसूस होती है? हमारा अपने ही अंतर्मन से संबंध इतना कमजोर क्यों पड़ गया है? मैंने लगभग हर घर में शरीर, दिमाग और दिल का यह मूक संघर्ष देखा है। फिर एक प्रश्न और अधिक तीव्रता से गूंजने लगा। क्या इसे ठीक किया जा सकता है? रेकी ग्रैंड मास्टर के तौर पर 3 दशकों से अधिक समय से मैं हीलिंग के मार्ग पर चलती रही हूं। न केवल एक अभ्यास के रूप में, बल्कि एक जीवंत अनुभव के रूप में और इन वर्षों में एक सच्चाई बार–बार सामने आई है। हीलिंग हमारे बाहर का विषय नहीं है, बल्कि हमारा अंतर्स्वभाव है। प्रत्येक मनुष्य में यह सहज प्रकाश है, फिर भी जीवन की आपाधापी के शोरगुल में हम भूल जाते हैं, भटक जाते हैं, पर हम समाधान बाहर खोजते हैं, जबकि स्रोत चुपचाप भीतर प्रतीक्षा कर रहा है। जैसे ही हम अंदर की ओर मुड़ते हैं, सब कुछ बदल जाता है। मन स्थिर होने लगता है। यह प्रयास से प्रवाह की ओर, भ्रम से स्पष्टता की ओर, अलगाव से जुड़ाव की ओर बढने का निमंत्रण है। हर घर हीलर अभियान प्राचीन आध्यात्मिक विभूतियों से प्रेरित है। यह कालातीत हीलिंग आर्ट में महारत हासिल करने हेतु एक ताजा दृष्टिकोण है। आधुनिक चिकित्सा से बहुत पहले यह एक प्राकृतिक और पवित्र कला के रूप में अस्तित्व में था। भौतिक शरीर से परे, हमारे पास ऊर्जा की सूक्ष्म परतें भी होती हैं। जब यह ऊर्जा सद्भाव में बहती है, तो हीलिंग स्वाभाविक रूप से होती है। ऋग्वेद में संस्कृत में एक श्लोक है–'ओम् अयं हस्ते, भगवण्यं पुरुष भगवत्रेह, अयं पुरुष विश्वभेषजोयं शिवभिमर्षम्'। इसका भावार्थ यह है कि मेरे हाथ एक दिव्य उपहार हैं, जिसमें उपचार की अपार क्षमताएं हैं। जब घर में एक भी व्यक्ति अपनी उपचारात्मक ऊर्जा को पहचान लेता है, तो पूरा वातावरण बदलना शुरू हो जाता है। अशांति का स्थान शांति ले लेती है। जागरूकता, प्रतिक्रिया का स्थान ले लेती है। करुणा स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होने लगती है। एक जागृत प्राणी में संपूर्ण स्थान को ऊपर उठाने की शक्ति होती है और जब ऐसे कई घर जागृत होने लगते हैं, तो जीवन जीने का एक नया तरीका विकसित होता है। आज के आधुनिक युग में भौतिक सुख–सुविधाओं की कोई कमी नहीं। फिर भी, लगभग हर दूसरे घर में कोई न कोई मानसिक तनाव, रिश्तों में कड़वाहट या शारीरिक बीमारियों से जूझ रहा है। इस आंतरिक असंतुलन और ऊर्जा अवरोधों को हल करना और हर परिवार को स्वास्थ्य का कवच प्रदान करना है। जैसा कि एक सार्वभौमिक नियम है, जहां भी दुख होता है, उसके निवारण का मार्ग भी वहीं से निकलता है। 'हर घर हीलर' यानी हर घर में एक उपचारक अभियान, हर परिवार स्वयं को ठीक करने में सक्षम बनाता है। 19 जुलाई से पंजाब के होशियारपुर से शुरू हुए इस अभियान में 100 परिवारों को अब अपना स्वयं का 'हीलर' मिल गया है।

ध्यान, योग और प्राणायाम के साथ उपचारक पूर्ण क्षमता एवं दक्षता प्राप्त करने के लिए नियमित अभ्यास का संकल्प लेते हैं। 'हर घर हीलर' अभियान देश में वैलनैस क्रांति की शुरुआत है, जो स्वास्थ्य एवं खुशियों का उजाला पूरी दुनिया में फैलाने में सक्षम है।

पाकिस्तान और गठबंधनों का दलदल

मनीष तिवारी

अंकारा रियाद और इस्लामाबाद के अधिकारी जब एक नई त्रिपक्षीय धुरी, मक्का संयुक्त रक्षा समझौते, के गुणों

का बखान करते हैं, तो किसी को भी गहरा 'डेजा वू' (पूर्वानुभव) महसूस हो सकता है। यह समझौता पश्चिम एशिया में पाकिस्तान के रणनीतिक प्रयासों के एक लंबे और काफी हद तक विडंबनापूर्ण इतिहास का एक नया अध्याय है। यह शीत युद्ध की सबसे त्रुटिपूर्ण संरचनाओं की भयावह याद दिलाता है। इसका जन्म राष्ट्रीय हितों के किसी स्वाभाविक संगम से नहीं, बल्कि असुरक्षा की एक सांझा, हालांकि अलग–अलग तरह से महसूस की गई भावना से हुआ है। सऊदी अरब, एक संशोधनवादी ईरान और बेचैन हूती विद्रोह के खिलाफ निवारण चाहते हैं। तुर्किए अपनी नव–ओटोमन महत्वाकांक्षाओं को पूरा करते हुए, खाड़ी में अपनी पैठ को गहरा करना चाहता है। पाकिस्तान, जो हमेशा नकदी की तंगी से जूझ रहा है और रणनीतिक रूप से अलग–थलग है, खाड़ी के पैट्रो–डॉलर और विश्व मंच पर प्रासंगिकता की नई भावना की तलाश में है। फिर भी, यही लेन–देन वाली नींव ठीक वही कारण है, जिसने पाकिस्तान के पहले के उपक्रमों को विफल कर दिया था। पाकिस्तान पश्चिम एशिया के प्रति अपने आकर्षण के बावजूद, क्षेत्र की मुख्य शक्ति गतिशीलता से मौलिक रूप से अलग है। इसने पारंपरिक रूप से एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में नहीं, बल्कि पश्चिमी रणनीतिक परियोजनाओं के लिए एक लांचपैड के रूप में कार्य किया है। फरवरी 1955 में, तुर्क–ईराकी बगदाद समझौते ने मध्य पूर्व संधि संगठन का निर्माण किया। इससे पहले 1954 में तुर्क–पाकिस्तान रक्षा समझौता हुआ था, जिस पर पाकिस्तान के विदेश मंत्री मुहम्मद जफरुल्ला खान और तुर्की के राजदूत सेलाहतिन रेफेट अर्बेल ने हस्ताक्षर किए थे। यह व्यवस्था, यू.के., यू.एस. और हाशिमियत ईराक के परस्पर हितों से निकलकर, तुर्की से पाकिस्तान तक फैले नियंत्रण की एक 'उत्तरी परत' को पूरा करने के लिए डिजाइन की गई थी। इसके बाद अप्रैल में यू.के., सितम्बर में पाकिस्तान और नवम्बर में ईरान मीटू में शामिल हो गए। ईरान के प्रवेश ने तुर्की–ईराक–ईरान–पाकिस्तान लाइन के साथ 'उत्तरी बैल्ट' को पूरा किया। 1958 में ईराक में जुलाई क्रांति के बाद, जब अब्द अल–करीम कासिम के नेतृत्व वाली सरकार ने समझौते से नाम वापस ले लिया, तो मीटू का नाम बदलकर सैंट्रल ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (सीईएनटीओ) कर दिया गया। वही रणनीतिक मृगतृष्णा दक्षिण पूर्व एशिया में भी दिखाई दी। 1954 में हिंद–चीन में फ्रांसीसी हार के बाद, वाशिंगटन क्षेत्र में साम्यवाद को रोकने और नियंत्रित करने के लिए उत्सुक था। सितम्बर 1954 में, पाकिस्तान सहित 8 सरकारों के प्रतिनिधियों ने मनीला में मुलाकात की और दक्षिण पूर्व एशिया संधि संगठन (एसईएटीओ) का गठन किया। दक्षिण पूर्व एशिया के साथ पाकिस्तान का कोई संबंध नहीं था, सिवाय इसके, कि वह अमरीका का शीत युद्ध का प्यादा था। पाकिस्तान के लिए ये गठबंधन एक साधन मात्र थे, जिसका उद्देश्य नई दिल्ली के खिलाफ एक मजबूत हाथ हासिल करना था, जिससे उन पश्चिमी ताकतों के लिए उसके अस्तित्व का कारण ही खत्म हो गया, जिन्होंने उसे समर्थन दिया था। पाकिस्तान के अयूब खान, जो खुद यू.एस.–पाकिस्तान संबंधों के शुरुआती वास्तुकारों में से एक थे, ने जनवरी 1962 में लंदन में 'द डेली टैलीग्राफ' से कहा कि पाकिस्तान का सीईएनटीओ और एसईएटीओ से विश्वास उठ रहा है। इन गठबंधनों ने 1965 और 1971 के युद्धों में किसी भी सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का काम नहीं किया। अंतिम अपमान 1971 में पाकिस्तान का विभाजन और बांग्लादेश का जन्म था। पाकिस्तान ने 1973 में एसईएटीओ से नाम वापस ले लिया और 1979 में सीईएनटीआ अपनी ही अप्रासंगिकता के बोझ तले ढह गया। यही पैटर्न इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के साथ दोहराता हुआ प्रतीत होता है। पाकिस्तान इसके सैन्यीकरण का एक प्रमुख हिस्सा रहा है और उसने कई बार कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के लिए इसका इस्तेमाल किया है लेकिन ओआईसी कभी भी एक व्यावहारिक रणनीतिक गठबंधन के लिए स्वाभाविक रूप से उपयुक्त नहीं रहा क्योंकि इस्लामी देशों के बीच कई आंतरिक असंतोष हैं। इसी तरह, जुलाई 1964 में सीईएनटीओ (ईरान, तुर्की और पाकिस्तान) के क्षेत्रीय सदस्यों द्वारा स्थापित क्षेत्रीय विकास सहयोग (आरसीडी) का उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक विकास को मजबूत करना था लेकिन वित्तीय, राजनीतिक और प्रशासनिक कठिनाइयों ने प्रगति को धीमा कर दिया। सीईएनटीआ की गिरावट के बावजूद इसका राजनीतिक महत्व लगातार बढ़ता गया। यह पहचानते हुए कि आीसीडी कोई प्रभावी सैन्य विकल्प प्रदान नहीं कर सकता, ईरान और तुर्की ने अभी भी सीईएनटीआ को महत्व दिया। 12 असंतोषजनक वर्षों के बाद, तीन क्षेत्रीय राष्ट्राध्यक्षों ने अप्रैल 1976 में इजमिर में एक शिखर सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें 1964 की घोषणा में संशोधन किया गया। 1977 में आीसीडी के लिए कानूनी ढांचे के रूप में इजमिर संधि पर हस्ताक्षर किए गए। फिर भी आरसीडी असफल रहा और 1985 में उसे इकोनॉमिक कोऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन के लिए रास्ता छोडना पड़ा। सीईएनटीआ और एसईटीओ के भूतों को बाहर निकालने से 2025 का सऊदी–पाकिस्तान पारस्परिक रक्षा समझौता गहराई से शिक्षाप्रद बन जाता है। रियाद के लिए एक पाकिस्तानी परमाणु छत्र का विस्तार करने के रूप में प्रचारित, यह समझौता सऊदी धरती पर हूती मिसाइल हमलों को रोकने में विफल रहा। जब ईरानी मिसाइलों ने प्रिंस सुल्तान एयरबेस और रियाद हवाई अड्डे पर हमला किया और जब 2026 की शुरुआत में रास तानूरा में अरामको रिफाइनरी पर हमला हुआ, तो यह स्पष्ट रूप से नपुंसक था। मक्का समझौता भी आंतरिक कलह से मुक्त नहीं है। अरब स्प्रिंग के दौरान शुरू में वे सीरिया में बशर अल–असद के खिलाफ एकजुट थे, दोनों देशों ने विभिन्न असद–विरोधी गुटों को वित्त पोषित किया। हालांकि, तुर्की ने मुस्लिम ब्रदरहुड के लिए भी समर्थन दिखाया, जिसका सऊदी अरब ने विरोध किया, जिससे रियाद में असहज भावना पैदा हुई। 2013 में, जब मिस्र में तख्तापलट हुआ और मोहम्मद मुर्सी, जो मुस्लिम ब्रदरहुड के सदस्य और मिस्र के तत्कालीन राष्ट्रपति थे, को प्रो–सऊदी अब्देल फतह अल–सिसी द्वारा जबरन हटा दिया गयाए तो तुर्की ने इस कदम की निंदा की। पाकिस्तान अपनी ओर से, इस अस्थिर गतिशीलता में एक पुल के रूप में कार्य करने की उम्मीद में कदम रख चुका है। लेकिन इतिहास बताता है कि वह अधिक संभावना से एक 'वेज' (फूट डालने वाला) बनेगा। यह संरक्षकों की तलाश में लगा एक राष्ट्र है जो संबंध से संसाधनों–वित्तीय सहायता, निवेश और राजनयिक समर्थन–को निकालने की कोशिश करता है,

बेलगाम हैं नशा माफिया

भारत में अवैध शराब की खपत दुनिया के सबसे बड़े अवैध बाजारों में से एक है कई बार यह अवैध शराब कम पैसे देकर नशा करने के लती गरीब पियक्कड़ों के लिए जानलेवा बन जाती है। जहरीली शराब से होने वाली मौतें एक गंभीर सामाजिक और प्रशासनिक चुनौती बनी हुई हैं। ताजा मामला गुजरात के भावनगर का है, जहां विदेशी शराब के नाम पर बेची गई जहरीली शराब पीने से 7 लोगों की मौत हो गई और 30 से अधिक लोग अस्पताल पहुंचे।

कुछ दिन सप्ताह माह के अन्तराल पर देश के किसी न किसी हिस्से से खबर आती है कि नकली शराब पीने के बाद लोगों की तबीयत बिगड़ी, कई अस्पताल पहुंचे और कुछ ने दम तोड़ दिया। प्रशासन सक्रिय होता है, गिरफ्तारियां होती हैं, जांच बैठती है, मुआवजे की घोषणा होती है और कुछ समय बाद मामला ठंडे बस्ते में पहुंच जाता है। गुजरात उन राज्यों में है जहां लंबे समय से शराबबंदी लागू है। इसके बावजूद भावनगर में कथित नकली शराब पीने के बाद कई लोगों की मौत और बड़ी संख्या में लोगों के बीमार होने की घटना सामने आई है। जिस राज्य में शराब की बिक्री और सेवन पर कानूनी प्रतिबंध है, वहां नकली शराब लोगों तक पहुंच कैसे रही है? पुलिस की शुरुआती जांच में एक लोकप्रिय ब्रांड के नाम पर डुप्लीकेट शराब बेचे जाने और इसके मध्य प्रदेश से लाए जाने की आशंका सामने आई है। पुलिस ने इस नेटवर्क से जुड़े लोगों को हिरासत में भी लिया है। लेकिन भावनगर कोई पहली घटना नहीं है। मई माह में महाराष्ट्र के पुणे और पिंपरी–चिंचवड़ त्रासदी इलाकों में जहरीली शराब पीने से 14 से 18 लोगों की जान चली गई। पुलिस जांच के अनुसार, अवैध रूप से अधिक मुनाफा कमाने के लिए इंडस्ट्रियल ग्रेड का घातक मेथनॉल मिक्स किया गया था। मई माह में ही पंजाब के अमृतसर के पांच गांवों में जहरीली शराब पीने से 14 लोगों की मौत हुई थी। गुजरात ने जुलाई 2022 में भी भयावह शराब त्रासदी देखी थी। बोटाद और आसपास के इलाकों में जहरीली शराब से 42 लोगों की मौत हुई थी और दर्जनों लोगों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था। उस समय भी पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई हुई, अधिकारियों का तबादला हुआ और अवैध शराब के नेटवर्क को तोड़ने के दावे किए गए थे। सवाल है कि चार वर्ष बाद भी यदि नकली शराब लोगों तक पहुंच रही है तो पिछली कार्रवाई से हमने आखिर सीखा क्या?

यह समस्या केवल गुजरात तक सीमित नहीं है। पंजाब, बिहार, तमिलनाडु, असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और कई अन्य राज्य समय–समय पर ऐसी त्रासदियों के गवाह बने हैं। तमिलनाडु के कालाकुरिची में जून 2024 में मेथेनॉल मिली अवैध शराब ने दर्जनों परिवारों को उजाड़ दिया था। आधिकारिक कार्रवाई के दौरान अवैध शराब जब्त हुई, गिरफ्तारियां हुई और प्रशासनिक अधिकारियों पर भी कार्रवाई की गई। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों में भी अवैध एवं नकली शराब के सेवन से होने वाली मौतों को अलग श्रेणी में दर्ज किया जाता है। उपलब्ध एनसीआरबी आधारित डेटा 2012 से 2024 तक राज्य वार ऐसी मौतों का हवाला देता है। इससे इतना तो साफ है कि यह किसी एक राज्य या एक क्षेत्र विशेष की समस्या नहीं, बल्कि दशकों से चली आ रही एक खतरनाक चुनौती है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि अक्सर इन घटनाओं में मरने वाले लोग समाज के आर्थिक रूप से दुर्बल कमजोर वर्ग से आते हैं। सस्ती शराब की तलाश उन्हें ऐसे अवैध कारोबारियों तक पहुंचा देती है जिन्हें न गुणवत्ता की चिंता होती है, न कानून का भय और न इंसानी जीवन की कीमत का एहसास। अधिक नशा पैदा करने या लागत कम रखने के लिए शराब में मेथेनॉल जैसे जहरीले रसायनों की मिलावट जानलेवा साबित हो सकती है। कल्लाकुरिची मामले में भी मेथेनॉल मिश्रित शराब की पुष्टि सामने आई थी। अधिकतर देखा जाता है कि हर बड़ी त्रासदी के बाद प्रशासन की एक परिचित तस्वीर सामने आती है। छापेमारी शुरू होती है, अवैध ठिकाने बंद किए जाते हैं, संदिग्ध गिरफ्तार होते हैं और पुलिस अधिकारियों से जवाब मांगा जाता है। लेकिन असली चुनौती घटना के बाद कार्रवाई करने की नहीं, घटना होने से पहले नेटवर्क को समाप्त करने की है।

अवैध शराब का कारोबार अकेले किसी गली या गांव में बैठा व्यक्ति नहीं चला सकता। कच्चा माल कहां से आता है? बोतलें कहां बनती हैं? लोकप्रिय कंपनियों के नाम और लेबल की नकल कैसे होती है? माल एक जिले से दूसरे जिले और कई बार एक राज्य से दूसरे राज्य तक कैसे पहुंचता है? परिवहन, भंडारण और बिक्री की जानकारी स्थानीय स्तर पर किसी को क्यों नहीं मिलती? यदि वर्षों तक कारोबार चलता रहता है तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या कहीं न कहीं प्रशासनिक लापरवाही, स्थानीय संरक्षण या भ्रष्ट तंत्र भी इसका रास्ता आसान कर रहा है। शराबबंदी वाले राज्यों के लिए यह समस्या और बड़ी चुनौती है। केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं होता। यदि वैध बिक्री बंद होने के बाद अवैध बाजार पैदा हो जाए और उसकी निगरानी कमजोर रहे तो तस्करों को अधिक मुनाफे का अवसर मिलता है। शराबबंदी का उद्देश्य समाज को नशे से बचाना है, लेकिन यदि उसी व्यवस्था के भीतर जहरीली शराब का संगठित बाजार फलने लगे तो नीति की समीक्षा और क्रियान्वयन दोनों जरूरी हो जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि शराबबंदी गलत है या शराब की खुली बिक्री समाधान है। असली प्रश्न नीति से अधिक उसके प्रभावी क्रियान्वयन का है। जहां प्रतिबंध है वहां अवैध सप्लाई पर कठोर निगरानी होनी चाहिए और जहां शराब की कानूनी बिक्री है वहां नकली उत्पादों की पहचान और वितरण व्यवस्था पर नियंत्रण मजबूत होना चाहिए। सरकारों को अब प्रत्येक त्रासदी के बाद केवल मुआवजा देने और कुछ लोगों को निलंबित करने से आगे बढ़ना होगा। अवैध शराब के मामलों में सप्लाई चेन की तह तक जांच, औद्योगिक मेथेनॉल की बिक्री और परिवहन की निगरानी, नकली ब्रांड और पैकेजिंग बनाने वालों पर कार्रवाई तथा बार–बार अवैध कारोबार में पकड़े जाने वालों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई जरूरी है। यह सारा अवैध कारोबार बिना सरकारी तंत्र की मिलीभगत के सम्भव नहीं है। स्थानीय पुलिस और आबकारी अधिकारियों की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए। इसके साथ ही ग्रामीण और गरीब बस्तियों में जागरूकता बढ़ानी होगी। लोगों को बताया जाना चाहिए कि अनजान स्रोत से खरीदी गई शराब जानलेवा हो सकती है। संदिग्ध शराब पीने के बाद उल्टी, चक्कर, दृष्टि धुंधली होने वा अन्य परेशानी के मामलों में तुरंत अस्पताल पहुंचना बेहद जरूरी है। कई बार इलाज में देर भी मौतों की संख्या बढ़ा देती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जहरीली शराब से हुई हर मौत को महज एक आंकड़ा समझने की मानसिकता बदलनी होगी।

मैंने कभी धर्म बदलने को नहीं कहा, इतना नीचे मत गिरो... हिमांशी खुराना के इल्जामों के बाद अब आसिम रियाज ने किया पलटवार

हिमांशी खुराना और आसिम रियाज की कंट्रोवर्सी खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही है। दोनों के अलग होने के बाद से ही उनके बीच के विवाद लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। साल 2023 में ब्रेकअप के करीब तीन साल बाद हिमांशी ने एक पॉडकास्ट में अपने रिश्ते को लेकर बहुत सी बातें शेयर की हैं। उन्होंने बताया कि उनके एक्स बॉयफ्रेंड चाहते थे कि वह उनके धर्म को समझें और उसका सम्मान करें। इन सबके बाद अब आसिम भी चुप नहीं रहे, उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए उनकी बात का जवाब दिया है। असल में, मैंने ही तुम्हें फिटनेस की तरफ प्रेरित किया था। तुम मुझसे मिलने के बाद ही इस फॉर्म में आए होय उससे पहले तो सब जानते ही थे कि तुम कैसे दिखते थे। इसलिए प्लीज, धर्म का इस्तेमाल हथियार की तरह मत करो। यह बहुत संवेदनशील मामला है और इतनी निजी चीज को लोगों के मन में मेरे लिए नफरत पैदा करने का जरिया बनाना बचकाना हरकत है। इससे पता चलता है कि अटेंशन पाने के लिए तुम किस हद तक गिर सकते हो। और जहां तक मेरे करियर की बात है, मुझे उसे बनाने के लिए या उसमें बिना किसी योगदान के उसका क्रेडिट लेने के लिए कभी किसी की जरूरत नहीं पड़ी। किसके पास ज्यादा पैसा है और किसके पास कम? अगर सच में जानना चाहते हो, तो बैंक स्टेटमेंट से इसका पता चल सकता है। लेकिन पैसा कभी भी चरित्र का पैमाना नहीं रहा। चरित्र तो तब पता चलता है जब अटेंशन, अहमियत या कुछ और व्यूज पाने की चाहत में इंसान किस हद तक गिर जाता है। सालों बाद, सिर्फ गॉसिप फैलाने के लिए पुराने रिश्तों और निजी जिंदगी को खोदकर निकालना, उस इंसान के बारे में ज्यादा बताता है जो ऐसा कर रहा है, न कि उस इंसान के बारे में जिसके बारे में बात हो रही है और माइक्रोफोन के पीछे बैठे उस आदमी से कहना चाहूंगा जिसका पेट सूअर की तरह बाहर निकला हुआ है और जिसने गॉसिप को ही अपना पेशा बना लिया है–भाई, सम्मान के साथ कह रहा हूं, दूसरों की जिंदगी पर चर्चा करने में थोड़ा कम समय बिताओ और जिम में थोड़ा ज्यादा समय लगाओ। आसिम का यह पोस्ट हिमांशी के पारस छाबड़ा के पॉडकास्ट पर आने और आसिम का नाम लिए बिना अपने पुराने रिश्ते के बारे में विस्तार से बात करने के कुछ दिनों बाद आया है। बातचीत के दौरान, उन्होंने उन धार्मिक मतभेदों के बारे में बात की जिन्होंने उनके पुराने रिश्ते पर असर डाला था और आरोप लगाया कि उनके तत्कालीन पार्टनर ने उनसे अपने धर्म के बारे में बात की थी और चाहते थे कि वह इसे समझें और स्वीकार करें। उन्होंने कहा कि वह ऐसा नहीं करना चाहती थीं क्योंकि उन्हें लगा कि यह उनके अपने धर्म के साथ विश्वासघात होगा। हिमांशी ने उस स्थिति को भी याद किया जब वह सोचती थीं कि अगर उन्होंने कोई दूसरा धर्म अपना लिया तो उनका "अंतिम संस्कार किया जाएगा या उन्हें दफनाया जाएगा"। जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि हिमांशी और आसिम बिग बॉस 13 के दौरान मिले थे, जहाँ उनका रिश्ता धीरे–धीरे रोमांटिक हो गया था।

> चरित्र तो तब पता चलता है जब अटेंशन, अहमियत या कुछ और व्यूज पाने की चाहत में इंसान किस हद तक गिर जाता है। सालों बाद, सिर्फ गॉसिप फैलाने के लिए पुराने रिश्तों और निजी जिंदगी को खोदकर निकालना, उस इंसान के बारे में ज्यादा बताता है जो ऐसा कर रहा है

श्रीराम राघवन की नई कहानी पर काम कर रहा है मैचबॉक्स शॉट्स, 'जॉनी गद्दार' की दिखेगी झलक

मुंबई स्थित प्रोडक्शन हाउस मैचबॉक्स शॉट्स ने अपनी नई परियोजनाओं की घोषणा की है। कंपनी के अनुसार, मशहूर फिल्ममेकर श्रीराम राघवन उनके लिए कई नई कहानियों पर काम कर रहे हैं। इनमें एक अनटाइटल्ड थ्रिलर भी शामिल है, जिसका अंदाज उनकी कल्ट क्लासिक फिल्म 'जॉनी गद्दार' जैसा होगा। साल 2027 में 'जॉनी गद्दार' की रिलीज को 20 साल पूरे होने वाले हैं। मैचबॉक्स शॉट्स के फाउंडर संजय राउत्रे ने कहा, "श्रीराम ने मैचबॉक्स को उसकी पहली फिल्म और पहला सबक दिया था कि अगर किसी कहानी को पूरी ईमानदारी और विश्वास के साथ बताया जाए, तो उसे हमेशा अपना दर्शक मिल जाता है। 'जॉनी गद्दार' की 20वीं सालगिरह के साल उसी अंदाज की थ्रिलर विकसित करना हम दोनों के लिए एक तरह से घर वापसी जैसा है। यह घोषणा ऐसे समय में हुई है, जब नेटफ्लिक्स के लिए मैचबॉक्स शॉट्स की बनाई वॉर सीरीज 'ऑपरेशन सफेद सागर' दुनियाभर में लगातार शानदार प्रदर्शन कर रही है। नॉन–इंग्लिश कंटेंट की ग्लोबल रैंकिंग में यह सीरीज दूसरे नंबर पर है, जबकि भारत में नंबर एक पर बनी हुई है। यह लगातार दूसरी नेटफ्लिक्स सीरीज है, जिसे मैचबॉक्स ने बनाया और जिसने ग्लोबल चार्ट पर बड़ी सफलता हासिल की है। इससे पहले आईसी 814 द कंधार हाईजैक' भी ग्लोबल स्तर पर नंबर दो पर डेब्यू कर चुकी है।

200 करोड़ रुपये से ज्यादा के बजट में बनी 'ऑपरेशन सफेद सागर' मैचबॉक्स शॉट्स की अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है। सीरीज के लिए काम कर रहे एयरबेस पर फाइटर एयरक्राफ्ट के साथ शूटिंग की गई और करीब 450 लोगों की टीम ने बेहद कठिन हाई–एल्टीट्यूड परिस्थितियों में सेट पर काम किया। हालांकि, कंपनी का सफर इतने बड़े स्तर से शुरू नहीं हुआ था। श्रीराम राघवन की 'अंधाधुन' मैचबॉक्स शॉट्स की पहली प्रोडक्शन थी। करीब 16 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने दुनियाभर में 450 करोड़ रुपये से ज्यादा का कारोबार किया और 2018 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्मों में शामिल रही। मैचबॉक्स के सफर में एक चीज लगातार बनी रही है कहानी और कहानीकार पर भरोसा, साथ ही लागत पर नियंत्रण। इसी सोच के बीच कंपनी ने अलग–अलग जॉनर और स्केल की कई परियोजनाएं की हैं, जिनमें 'मोनिका ओ माय डार्लिंग', 'थ्री ऑफ अस', 'स्कूप', 'मेरी क्रिसमस' और 'खौफ' जैसी फिल्में और सीरीज शामिल हैं। कंपनी के मुताबिक, अलग–अलग तरह की कहानियों में निवेश करना शुरुआत में एक क्रिएटिव फैसला था, जो धीरे–धीरे बिजनेस स्ट्रैटेजी में बदल गया। इससे कंपनी किसी एक तरह के दर्शक या किसी एक फॉर्मेट पर निर्भर नहीं रहती। संजय राउत्रे के साथ पार्टनर्स सरिता पाटिल और दीक्षा राउत्रे भी कंपनी का नेतृत्व कर रहे हैं। मैचबॉक्स का मानना है कि किसी प्रोजेक्ट की सफलता सिर्फ उसकी ओपनिंग से तय नहीं होती। सरिता पाटिल के मुताबिक, असली सवाल यह है कि क्या लोग सालों बाद भी किसी फिल्म को देख रहे हैं और दूसरों को उसकी सिफारिश कर रहे हैं। उनके अनुसार, दर्शकों का ऐसा प्यार खरीदा या किसी रणनीति से हासिल नहीं किया जा सकता। ऑपरेशन सफेद सागर' की ग्लोबल सफलता के बाद जहां कंपनी अपनी स्ट्रीमिंग स्लेट का विस्तार कर रही है, वहीं थिएट्रिकल फिल्मों को लेकर भी उसकी प्रतिबद्धता कायम है। कंपनी का कहना है कि हर फॉर्मेट की अपनी

अर्थव्यवस्था और अपनी ऑडियंस होती है और हर कहानी को उसी हिसाब से विकसित किया जाता है। कुछ कहानियां सिनेमाघर में अजनबियों से भरे अंधेरे हॉल में देखने के लिए होती हैं, जबकि कुछ घर के आराम में ज्यादा बेहतर अनुभव देती हैं। दोनों अनुभव कंपनी के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। मैचबॉक्स शॉट्स की नई स्लेट में श्रीराम राघवन के अलावा हंसल मेहता, वासन बाला और जस्मीत रीन जैसे फिल्ममेकर्स के साथ भी प्रोजेक्ट्स शामिल हैं।कंपनी का विस्तार सिर्फ फिल्मों और सीरीज तक सीमित नहीं है। मैचबॉक्स ने 'द गुरुग्राम स्कूल मर्डर' और 'द जॉनसन एंड जॉनसन फाइल्स' समेत कई किताबों के अधिकार भी हासिल किए हैं। इसका उद्देश्य अपनी कहानियों पर ज्यादा नियंत्रण रखना और तैयार स्क्रिप्ट्स के लिए बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के बजाय खुद मजबूत आईपी तैयार करना है। संजय राउत्रे ने कहा कि बाहर से देखने पर मैचबॉक्स की स्लेट भले ही अलग–अलग तरह की नजर आती हो, लेकिन अंदर से हर प्रोजेक्ट के पीछे एक ही सवाल होता है क्या यह कहानी अस्तित्व में आने लायक है और क्या इसे ऐसी लागत में बनाया जा सकता है, जिसे दर्शक सही ठहरा सकें? उनके मुताबिक, कम बजट में बनाई गई 'थ्री ऑफ अस' जैसी शांत फिल्म कंपनी के लिए उतनी ही संतोषजनक हो सकती है, जितनी 200 करोड़ रुपये की 'ऑपरेशन सफेद सागर' जैसी बड़ी फिल्म। उनके शब्दों में, "फिल्म का बड़ा होना जरूरी नहीं है। जरूरी यह है कि उसका गणित सही हो।" मैचबॉक्स शॉट्स खुद को एक बुटीक प्रोडक्शन हाउस के रूप में देखता है, लेकिन उसकी महत्वाकांक्षा इससे कहीं बड़ी है। कंपनी का लक्ष्य लंबे समय तक चलने वाले आईपी तैयार करना, क्रिएटर्स के साथ मजबूत और स्थायी साझेदारी बनाना और थिएट्रिकल, स्ट्रीमिंग के साथ–साथ इंटरनेशनल मार्केट में भी काम करना है।

चोट के बाद पहली बार नजर आई रश्मिका मंदाना, जानें पति के साथ कहां पहुंचीं?

बीते दिनों रश्मिका मंदाना को फिल्म श्मायसाश की शूटिंग के दौरान चोट लगी थी। मगर अब एक्ट्रेस इससे उबर चुकी हैं। इस हादसे के बाद रश्मिका पहली बार सार्वजनिक रूप से दिखाई दीं। इस दौरान उनके पति विजय देवरकोंडा भी एक्ट्रेस का हाथ थामे दिखे। रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा हाल ही में साउथ के मशहूर निर्माता निरंजन रेड्डी के बेटे की सगाई में एक साथ नजर आए। दोनों हाथों में हाथ डाले मुस्कुराते हुए इस आयोजन में शामिल हुए। यह इवेंट हैदराबाद में आयोजित हुआ था। हैदराबाद में हुए इस सगाई समारोह में रश्मिका और विजय एक बार फिर कपल गोल्स सेट करते नजर आए। रश्मिका ने जहां इस इवेंट के लिए ब्लैक कलर का गोल्डन जरी वाला लहंगा चुना था। वहीं विजय भी ब्लैक आउटफिट्स में नजर आए। बात करें एक्ट्रेस के मेकअप और गहनों की तो खुले बालों और गोल्डन ज्वैलरी में वह काफी खूबसूरत नजर आ रही थीं। दोनों के वीडियो देखते ही देखते वायरल हो गए। बता दें, कुछ समय पहले ही एक्ट्रेस की हिप सर्जरी हुई है। इसके बाद से वह कई दिनों तक घर पर आराम कर रहीं थी। अब वह सर्जरी के बाद पहली बार सार्वजनिक रूप से सामने आईं।

इससे पहले एक्ट्रेस ने इस चोट की जानकारी फैंस को सोशल मीडिया के जरिए दी थी। उन्होंने बताया था कि एक डांस सीक्वेंस की शूटिंग के दौरान उनके कूल्हे की टेंडन पूरी तरह से अलग हो गई थी। इसी चोट की वजह से उन्हें छह हफ्ते आराम करने की सलाह दी गई थी। रश्मिका की आगामी फिल्म मैसा की शूटिंग चल रही है। फिल्म का निर्देशन नवोदित निर्देशक रवींद्र पुल्ले कर रहे हैं। इसका निर्माण अनफॉर्मूला फिल्म्स के बैनर तले हो रहा है। यह फिल्म गोंड जनजाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक इमोशनल एक्शन थ्रिलर बताई जा रही है। रश्मिका इसमें एक गोंड महिला की भूमिका निभा रही हैं। इसके अलावा वे अपने एक्टर–पति विजय देवरकोंडा के साथ फिल्म रणबाली में भी नजर आएंगी।

इस मंदिर में भक्त ने भगवान के साथ किया धोखा ! पहले दानपेटी मे डाला करोड़ों का चेक और फिर...

आजकल लोग धोखाधड़ी करने में इतने माहिर हो गए हैं कि वह आम इंसान क्या भगवान को भी नहीं छोड़ रहे हैं। आंध्र प्रदेश से एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसे सुन आपका लोगों पर से विश्वास ही हट जाएगा। हर किसी के मन में बस यही सवाल है कि कोई भगवान के साथ ऐसा कैसे कर सकता है? चलिए जानते हैं क्या है पूरा मामला।

100 करोड़ रुपये का चेक देख सभी हैरान

दरअसल आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में सिंहाचलम पहाड़ी पर स्थित श्री वराह लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर का प्रशासन उस समय हैरान रह गया जब उन्हें दानपात्र में से 100 करोड़ रुपये का चेक मिला। पहले तो किसी को विश्वाश ही नहीं हुआ कि कोई मोटी रकम दान में कैसे दे सकता है। ऐसे में इस चेक को कार्यकारी अधिकारी के पास ले जाया गया।

मंदिर प्रबंधन के उड़े होश

एक तरफ इस चेक को देखकर खुशी थी तो वहीं दूसरी तरफ गड़बड़ी की आशंका भी लग रही थी। मंदिर प्रबंधन ने भी देर ना करते हुए चेक को कैश करने के लिए बैंक को दे दिया। बैंक वालों और मंदिर प्रबंधन के उस समय होश उड़ गए जब पता चला कि अकाउंट में केवल 17 रुपए है। अब यह चेक चर्चा में बना हुआ है।

चेक की तस्वीर हो रही वायरल

इस चेक की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, जिसमें बोड्डेपल्ली राधाकृष्ण नाम के शख्स के हस्ताक्षर नजर आ रहे हें।. हालांकि इस चेक पर शख्स ने कोई तारीख नहीं डाली थी। भगवान के साथ धोखा करने वाले शख्स का अकाउंट विशाखापत्तनम स्थध्ति कोटक महिंद्रा बैंक में है। 100 करोड़ रुपये का चेक देने वाले इस शख्स का पता लगाने की कोशिश की जा रही है।

भारत का दूसरा सबसे अमीर मंदिर में से एक है ये

बता दें कि श्री वराह लक्ष्मी नृसिंह स्वामी मंदिर भगवान विष्णु के भक्तों के बीच बहुत लोकप्रिय है क्योंकि यह मंदिर विष्णु के नौवें अवतार, भगवान नृसिंह को समर्पित है। यह मंदिर पहाड़ी की चोटी पर बनाया गया है जिसे सिंहाचलम या शेर की पहाड़ी कहा जाता है। कहा जाता है कि यह मंदिर तिरुपति मंदिर के बाद भारत का दूसरा सबसे अमीर मंदिर है। यह मंदिर उड़ीसा और द्रविड़ शैली की वास्तुकला के समामेलन को प्रदर्शित करता हैं।

ये है इस मंदिर की खासियत

श्री वाराह लक्ष्मी नरसिंह मन्दिर सिंहाचल क्षेत्र में ग्यारहवीं शताब्दी में बने विश्व के गिने–चुने प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है। पुरातत्व विशेषज्ञों ने मंदिर परिसर में लगभग 500 शिलालेखों की खोज की है जिनमें से कुछ राजाओं, उनके अधिकारियों और नागरिकों के योगदान द्वारा बनाए गए थे। मंदिर के अंदर दीवारों पर भगवान विष्णु, उनकी पत्नी लक्ष्मी और अज्वार के चित्र बने हुए हैं और प्रवेश द्वार पर हिन्दू संत के पैरों के निशान बने हुए हैं। प्रमुख मंदिर के परिसर में केवल चार मुख्य आभूषणों का उपयोग किया गया है, जिसमें हीरे और माणिक से बना एक थिरुनामम, पन्ना की एक श्रृंखला, एक 100 तोला सोने का कंगन और एक स्वर्ण मुकुट सम्मिलित है।

प्रेगनेंसी में थकान से टूट रहा है शरीर, तो यह उपाय बन सकते हैं आपका सहारा

"प्रेगनेंसी के दौरान महिलाओं के शरीर में होने वाले हार्मोनल बदलावों के कारण वह सामान्य दिनों की तरह महसूस नहीं करती हैं। लेकिन कई बार यह सुस्ती और थकान आदि का असर आपके मूड पर भी पड़ता है। जिसकी वजह से स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लगता है।"

हर महिला के लिए मां बनने का एहसास इस दुनिया का सबसे खूबसूरत एहसास होता है। एक ओर जहां मां बनने का एहसास खुशी देता है, तो वहीं प्रेगनेंसी के दौरान कई तरह की मुश्किलों का सामना भी करना होता है। प्रेगनेंसी के दौरान महिलाओं के शरीर में होने वाले हार्मोनल बदलावों के कारण वह सामान्य दिनों की तरह महसूस नहीं करती हैं। कुछ महिलाओं को प्रेगनेंसी में आलस, थकान और सुस्ती ज्यादा लगती है। इसी कारण प्रेगनेंसी का पता चलने पर डॉक्टर भी उन्हें आराम करने की सलाह देते हैं। लेकिन कई बार यह सुस्ती और थकान आदि का असर आपके मूड पर भी पड़ता है। जिसकी वजह से स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लगता है। अगर आपके साथ भी यह समस्या है तो बता दें कि यह आर्टिकल आपके लिए है। इस आर्टिकल के जरिए हम आपको 5 ऐसे उपायों के बारे में बताने जा रहे हैं। जो प्रेगनेंसी के दौरान आपकी सुस्ती और आलस को दूर भगाएंगे।

पानी ज्यादा पिएं

आमतौर पर गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को पेशाब ज्यादा लगती है। जिस कारण आमदिनों की अपेक्षा उनके शरीर में पानी की जरूरत ज्यादा बढ़ जाता है। ऐसे में अगर आप पर्याप्त पानी नहीं पीती हैं, तो इससे डिहाइड्रेशन हो सकता है। यह मां और गर्भ में पलने वाले बच्चे दोनों के लिए खतरनाक होता है। इसलिए गर्भावस्था के दौरान लिक्विड डाइट बढ़ा देना चाहिए। इसलिए दिन में कम से कम 3/3.5 लीटर पानी जरूर पीना चाहिए। लिक्विड डाइट के तौर पर आपको चाय, कॉफी, सोडा, कोल्ड ड्रिंक्स, एल्कोहल आदि का सेवन नहीं शुरू करना है। बल्कि लिक्विड डाइट में आप फलों का जूस, फलों की स्मूदी, सब्जियों की स्मूदी, नींबू पानी, दूध, शेक्स आदि पी सकती हैं।

मीठी चीजें कम खाएं

बता दें कि चीनी आपके शरीर में शुगर की मात्रा को अचानक से बढ़ा देती है। जिसकी वजह से आप थोड़े ही समय में थकान महसूस करने लगती हैं। इसलिए गर्भावस्था के दौरान चीनी से बनी मीठी चीजों की सेवन कम से कम करना चाहिए। आप फल और ड्राई फ्रूट्स खा सकती हैं। क्योंकि इनमें प्राकृतिक मिठास पाई जाती है और यह आपको नुकसान भी नहीं पहुंचाता है। चीनी की जगह पर सिंपल कार्ब्स आपको ज्यादा समय तक एनर्जी से भरा रखेंगे।

अच्छी–गहरी नींद लें

प्रेगनेंसी के दौरान बच्चे का विकास होने के साथ ही पेट का वजन भी बढ़ने लगता है। तब सोने में समस्या होने लगती है। लेकिन बच्चे के पूर्ण विकास के लिए गहरी और अच्छी नींद लेना जरूरी होता है। इसलिए गर्भावस्था के दौरान सोने के समय आप प्रेगनेंसी पिलो का भी इस्तेमाल कर सकती हैं। प्रेगनेंसी पिलो ऐसे तकिए होते हैं, जिससे आपको बंप के साथ सोने में परेशानी नहीं होती है। इसके अलावा आप सोने के करीब एक घंटे पहले पानी पिएं। क्योंकि बाद में पानी पीने से रात में आपको पेशाब के लिए जाना पड़ सकता है।

जरूर ले पावर नैप

प्रेगनेंसी के दौरान 7–8 घंटे की नींद आपको पूरादिन एक्टिव रखने के लिए काफी नहीं होती है। इसलिए आपके पास दिन में जब भी समय हो तो आप पावर नैप ले सकती हैं। पावर नैप यानी कि जब आप बोझिल महसूस करती हैं। तो दिन में आप 20–30 मिनट की नींद ले सकती हैं। इससे आपको फिर से रिफ्रेशमेंट मिल जाती है। बता दें कि गर्भावस्था के दौरान नींद, खाना और पौष्टिक तत्वों की जरूरत दोगुनी हो जाती है।

रूटीन और समय करें फिक्स

गर्भावस्था के दौरान आपको अपने सोने, खाने, काम करने का समय और रूटीन फिक्स करना चाहिए। इससे गर्भ में पलने वाले बच्चे का विकास बेहतर तरीके से होता है। क्योंकि बेसमय का खाना और बेसमय की नींद आपके अंदर आलस, परेशानी और थकान को बढ़ाता है। इसके साथ ही बच्चे को भी परेशानी महसूस होती है।

गर्मियों में खीरे का रस बेदाग और ग्लोइंग स्किन के लिए है फायदेमंद, मिलेगी सॉफ्ट स्किन

चेहरे पर खीरे का इस्तेमाल किए जाने से त्वचा हाइड्रेट रहती है। क्योंकि खीरा में पानी की भरपूर मात्रा पायी जाती है। वहीं पानी हमारी स्किन को हेल्दी और ग्लोइंग बनाने में मदद करता है। आप खीरा को अपने स्किन केयर रूटीन में भी शामिल कर सकती हैं। बता दें कि खीरा से आप फेस मास्क और टोनर आदि भी बना सकती हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि चेहरे पर खीरे का कैसे इस्तेमाल किया जाता है।

आंखों की सूजन होगी कम

अगर अक्सर आपकी आंखों के नीचे सूजन आ जाती हैं, तो इसको कम करने के लिए आप खीरे का इस्तेमाल कर सकती हैं। आप खीरे से आइस क्यूब बना लें। इसे बनाने के लिए खीरे को कद्दूकस से कस लें। फिर इसके रस को आइस ट्रे में रखकर फ्रिज में स्टोर कर दें। इस आसान तरीके से खीरे का आइस क्यूब बनकर तैयार हो जाएगा। अब आप इन्हें अपनी आंखों पर इस्तेमाल कर सकती हैं। आइस क्यूब को आंखों पर रब करने से सूजन कम हो जाएगी। आप चाहें तो खीरे को टुकड़ों में काटकर भी आंखों के ऊपर रख सकती हैं।

खीरे का टोनर

चेहरे को तरोताजा बनाए रखने के लिए खीरा का टोनर काफी ज्यादा फायदेमंद होता है। वहीं गर्मियों में यह टोनर बेहद काम आता है। क्योंकि खीरा का टोनर स्किन को हाइड्रेट करने के साथ ही पोर्स को भी श्रिंक करता है।

टोनर बनाने की सामग्री

खीरा– 1

गुलाबजल

साफ कपड़ा

ऐसे बनाएं टोनर

सबसे पहले 2–3 खीरे को अच्छे से धो लें।

इसके बाद खीरा को मिक्सी में अच्छे से पीस लें।

अब खीरा के मिक्चर को एक साफ कॉटन के कपड़े में डालकर इसका रस निकाल लें।

फिर इस रस को एक स्प्रे बोतल में रख दें।

इसमें 4–5 चम्मच गुलाब जल मिक्स कर दें।

दोनों को अच्छे से मिक्स कर दें।

ऐसे करें फेस पर अप्लाई

टोनर को फेस पर अप्लाई करने के पहले चेहरा अच्छे से धो लें।

इसके बाद चेहरे पर टोनर अप्लाई करें।

फेस पर खीरा लगाने के फायदे

अगर आपकी ऑयली स्किन है और मुंहासे की समस्या है, तो इसमें खीरा काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। मुंहासे की समस्या से निजात पाने के लिए खीरा के रस और टी ट्री ऑयल को मिक्स कर फेस पर अप्लाई करें। सप्ताह में तीन बार इस उपाय को अपनाने से मुंहासे की समस्या कम होने लगेगी।

अगर आपके पास मेकअप रिमूवर नहीं है, तो आप खीरे के रस से मेकअप को हटा सकती हैं। मेकअप को रिमूव करने के लिए खीरे के रस में 1–2 बूंद नारियल का तेल मिक्स कर लें। फिर कॉटन की मदद से इस लिक्विड से मेकअप हटा लें।

गर्मियों के मौसम में सनबर्न होने से स्किन पर खुजली और रैशेज होने लगते हैं। इस समस्या से राहत पाने के लिए आप प्रभावित जगह पर खीरा का टुकड़ा रख लें।

स्किन डल होने पर आप खीरे का रस फेस पर अप्लाई कर सकती हैं। इससे आपका चेहरा ब्राइट होने लगेगा।

सिरदर्द की समस्या से हो गए हैं परेशान, तो यह हो सकती है वजह, ऐसे पाएं निजात

आजकल की भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल में सिरदर्द होना एक आम समस्या हो गई है। हालांकि सिरदर्द के कई कारण हो सकते हैं। जिनमें तनाव, गैस, गलत खान–पान, सर्दी–जुकाम और थकान वगैरह भी सिरदर्द की वजह हो सकती है। सिरदर्द के पीछे का एक कारण शरीर में पोषक तत्वों की कमी भी हो सकती है। अक्सर सिर दर्द होने पर हम पेन किलर खा लेते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इसके गंभीर परिणाम भी हो सकते हैं। ऐसे में अगर आपको भी अक्सर सिरदर्द की समस्या रहती है, तो इसके पीछे का कारण जानना बेहद जरूरी होता है। साथ ही सिरदर्द को दूर करने के तरीकों के बारे में भी जानकारी होना जरूरी है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको सिरदर्द होने के कारण और इससे बचने के तरीके के बारे में बताने जा रहे हैं।

जानिए सिरदर्द के पीछे का कारण

हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो जब शरीर में सोडियम की कमी होती है, तो सिरदर्द हो सकता है। वहीं अगर आप अक्सर सिर दर्द की समस्या से परेशान रहते हैं, तो आपको सोडियम लेवल की जांच जरूर करवानी चाहिए। क्योंकि शरीर में सोडियम की कमी होने पर थकान, भूख में कमी और चिड़चिड़ापन के लक्षण नजर आ सकते हैं। बता दें कि लंबे समय तक शरीर में सोडियम की कमी होने पर हमारे शरीर के कई फंक्शन्स पर भी असर पड़ता है। यहां तक की कई बार सोडियम की कमी से व्यक्ति बेहोश तक हो जाता है। सोडियम की कमी होने पर लोगों के सिर में दर्द बना रहता है।

ऐसे दूर करें सोडियम की कमी

व्यक्ति के शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी होने पर सोडियम लेवल में कमी आ सकती है। ज्यादा पसीना या ज्यादा यूरिन आने के कारण भी ऐसा हो सकता है। ऐसे में आप अपनी डाइट में सोडियम की मात्रा कम लेते हैं, तो खाने में नमक की मात्रा का खास ख्याल रखना चाहिए। इसके साथ ही शरीर में पानी की सही मात्रा का होना भी काफी जरूरी होता है। क्योंकि शरीर में पानी की कमी होने पर डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है। डिहाइड्रेशन से भी शरीर में सोडियम की कमी हो सकती है। ऐसे में अगर आपको अक्सर सिरदर्द रहता है, तो हो सकता है कि आप पर्याप्त मात्रा में पानी ना पी रहे हों। वहीं उल्टी व दस्त की समस्या होने पर भी शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स का बैलेंस बनाए रखने के लिए आप नमक की सही मात्रा का सेवन करें।

संक्षिप्त

भारतीय बैंक एक दशक के सर्वश्रेष्ठ दौर में, क्या अब कर्ज लेना होगा आसान?

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय बैंक पिछले एक दशक के अपने सबसे अच्छे दौर में हैं। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड ने यह जानकारी दी है। कंपनी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में यह बात कही। गैर–निष्पादित परिसंपत्तियां (एनपीए) ऐतिहासिक निचले स्तर पर पहुंच गई हैं। बैंकों की बैलेंस शीट भी मजबूत पूंजी बफर से सुदृढ़ हुई है। वित्तीय सेवा कंपनी ने बैंकिंग क्षेत्र के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सुधार को रेखांकित किया। उसने स्वच्छ बैलेंस शीट और मजबूत बुनियादी बातों को भारतीय बैंकों के लिए प्रमुख सहायक कारक बताया। मोतीलाल ओसवाल ने अपनी पोस्ट में कहा कि भारतीय बैंक एक दशक के सर्वश्रेष्ठ दौर में हैं। एनपीए ऐतिहासिक निचले स्तर पर हैं। यह मूल्यांकन बैंकिंग प्रणाली में संपत्ति गुणवत्ता में लगातार सुधार की पृष्ठभूमि में आया है। हालिया बैंकिंग क्षेत्र के आंकड़ों के अनुसार, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का सकल गैर–निष्पादित परिसंपत्तियां मार्च 2026 में करीब 1.8 फीसदी के बहु–दशकीय निचले स्तर पर आ गया। शुद्ध एनपीए लगभग 0.4 फीसदी रहा। पूंजी पर्याप्तता भी आरामदायक बनी हुई है। बैंकिंग क्षेत्र तनावग्रस्त परिसंपत्तियों की लंबे समय तक सफाई और बैलेंस शीट की मरम्मत के बाद मजबूत होकर उभरा है। संपत्ति गुणवत्ता में सुधार के साथ–साथ मजबूत लाभप्रदता भी आई है। पर्याप्त पूंजी ने बैंकों को कर्ज वृद्धि का समर्थन करने के लिए अधिक क्षमता प्रदान की है। मोतीलाल ओसवाल के अवलोकन भारतीय बैंकिंग प्रणाली के रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के मूल्यांकन के अनुरूप हैं। केंद्रीय बैंक की नवीनतम वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट ने दर्शाया कि बैंक मजबूत पूंजी बफर के साथ लचीले बने हुए हैं। वे गंभीर तनाव परिदृश्यों का सामना करने में सक्षम हैं। मोतीलाल ओसवाल ने मजबूत बैंक बैलेंस शीट के व्यापक कर्ज के चक्र पर पड़ने वाले प्रभावों की ओर भी इशारा किया है। एनपीए ऐतिहासिक निचले स्तर पर हैं। पूंजी की स्थिति स्वस्थ बनी हुई है। बैंक विवेकपूर्ण अंडरराइटिंग मानकों को बनाए रखते हुए कर्ज देने का विस्तार करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं। संपत्ति गुणवत्ता में सुधार पिछले दशक के तनाव से एक तेज बदलाव को दर्शाता है। उस दौरान उच्च कॉर्पोरेट लीवरेज और बढ़ते खराब कर्ज ने बैंकों की लाभप्रदता पर दबाव डाला था। इससे कर्ज वृद्धि बाधित हुई थी। कंपनी का आशावादी मूल्यांकन ऐसे समय में आया है जब कर्ज वृद्धि ने गति पकड़ ली है। 2025–26 के दौरान प्रणाली–व्यापी बैंक कर्ज वृद्धि सालाना आधार पर 14.5 फीसदी बढ़ी। जमा वृद्धि 11.5 फीसदी रही। यह जानकारी भारत की वित्तीय प्रणाली के हालिया मूल्यांकनों में उद्धृत आंकड़ों के अनुसार है। मोतीलाल ओसवाल का विचार है कि बैंकिंग क्षेत्र बेहतर कर्ज चक्र का एक महत्वपूर्ण लाभार्थी बना रह सकता है। विशेष रूप से स्वस्थ कॉर्पोरेट बैलेंस शीट और निरंतर आर्थिक गतिविधि कर्ज की मांग का समर्थन करती है।

तेल की कीमतों में नरमी से बाजार में उछाल,सेंसेक्स 200 अंक चढ़ा, निफ्टी 24,300 के पार

नई दिल्ली,एजेंसी। सोमवार को भारतीय शेयर बाजार ने तेजी के साथ नए सप्ताह की शुरुआत की। सेंसेक्स 207.73 अंक बढ़कर 77,748.56 पर कारोबार करता दिखा, जबकि निफ्टी 50.66 अंक की बढ़त के साथ 24,302.65 पर पहुंच गया। ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों की घोषणा से पहले तेल कीमतों में गिरावट आने से बाजार को यह बढ़त मिली। बाजार में इन्फोसिस और एचडीएफसी बैंक जैसे प्रमुख शेयर सबसे अधिक बढ़ने वाले शेयरों में शामिल रहे। हालांकि, पश्चिम एशिया में लगातार भू–राजनीतिक तनाव और वैश्विक बॉन्ड प्रतिफल में वृद्धि भारतीय निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता पर असर डाल रही है। अमेरिकी ट्रेजरी के बॉन्ड प्रतिफल पर दबाव कम करने के हालिया प्रयास स्थायी राहत देने में विफल रहे हैं। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और मुद्रास्फीति की नई चिंताएं वैश्विक बाजारों के लिए प्रमुख बाधाएं बनी हुई हैं। विश्लेषकों का कहना है कि निफ्टी का 21 अगस्त 2026 के उच्च स्तर 24,284 से ऊपर लगातार बने रहना वापसी का संकेत देगा। ईरान पर अमेरिका द्वारा नए प्रतिबंधों की घोषणा से पहले कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई। इस गिरावट ने भारतीय शेयर बाजार को मजबूती दी। इन्फोसिस और एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े शेयरों में अच्छी खरीदारी देखी गई। इन शेयरों ने बाजार की बढ़त में महत्वपूर्ण योगदान दिया। टोक्यो के समय अनुसार दोपहर 12 बजे तक एसएंडपी 500 वायदा में थोड़ा बदलाव देखा गया। जापान का निक्केई 225 वायदा 0.2 फीसदी गिरा, जबकि जापान का टॉपिक्स 0.3 फीसदी बढ़ा। ऑस्ट्रेलिया का एसएंडपीएएसएक्स 200 सूचकांक 0.6 फीसदी चढ़ा। हांगकांग का हैंग सेंग 2 फीसदी और शंघाई कंपोजिट 0.8 फीसदी गिरे। यूरो स्टॉक्स 50 वायदा अपरिवर्तित रहा।

सीडब्ल्यूजी पदकवीर लवप्रीत को जगह नहीं, टेनिस-जूडो-रोइंग में भारी कटौती पर रोष

नई दिल्ली,एजेंसी। एशियाई खेलों के दल में एक ऐसे वेटलिफ्टर को शामिल कर लिया गया है जो चोटिल है और इन खेलों के लिए तैयारियां ही नहीं कर रहा है। ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीतने वाले ऋषिकांत सिंह वेटलिफ्टिंग टीम में शामिल इकलौते पुरुष लिफ्टर हैं। ऋषिकांत को ग्लासगो में ही चोट लग गई थी और डॉक्टरों ने उन्हें तीन माह के आराम की सलाह दी थी। इसके बाद वह मोदीनगर में चल रहे कैंप में शामिल ही नहीं हुए, लेकिन साई की ओर से एशियाई खेलों के दल की समीक्षा में ऋषिकांत को टीम में शामिल कर लिया गया, लेकिन राष्ट्रीय शिविर में इन खेलों की तैयारियां कर रहे लिफ्टर लवप्रीत सिंह को बाहर कर दिया गया है। लवप्रीत ने भी सुपर हैवीवेट वर्ग में 400 किलो से ऊपर वजन उठाते हुए ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में रजत जीता था। वह मई में गांधीनगर में हुई एशियाई चौंपियनशिप में पांचवें स्थान पर रहे थे, लेकिन उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया है। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की ओर से खेल मंत्रालय को मंजूरी के लिए 504 खिलाडिघ्यों का दल भेजा गया था, लेकिन मंत्रालय ने 492 खिलाडिघ्यों को मंजूरी दी है। सिर्फ वेटलिफ्टिंग ही नहीं टेनिस, जूडो और रोइंग की टीम में कई प्रमुख खिलाडिघ्यों के नाम काटे जाने पर भारी रोष है।

सच्चाई यह है कि राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वाले एम राजा और चोटिल होने के कारण ग्लासगो से वापस भेज दिए गए दिलबाग सिंह भी एशियाड की टीम में थे। ये दोनों लिफ्टर भी चोटिल होने के कारण राष्ट्रीय शिविर में शामिल नहीं हुआ। सूत्र बताते हैं कि ग्लासगो से लौटने के बाद ऋषिकांत, राजा और दिलबाग ने राष्ट्रीय शिविर में अभ्यास ही नहीं किया। मीराबाई, ज्ञानेश्वरी, हरजिंदर, निरुपमा के साथ लवप्रीत कैंप में तैयारियों में जुटे रहे। साई ने राजा, दिलबाग, लवप्रीत, संजना का नाम तो काट दिया, लेकिन ऋषिकांत को टीम में रख लिया जो किसी भी कीमत पर एशियाड में नहीं जा सकते हैं। वहीं, लवप्रीत ग्लासगो से लौटने के तुरंत बाद ही कैंप में तैयारियों में जुटे हैं। जूडो में राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण जीतने वाले हर्ष सिंह और पदक विजेता उन्नति शर्मा को टीमें जगह नहीं दी गई है। सिर्फ तीन महिला जुडोका टीम में हैं, जबकि जूडो महासंघ ने सात पुरुष और सात महिला जुडोकाओं को शामिल किया था। वहीं टेनिस में देश की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी सहजा यामलापल्ली, वैष्णवी अडकर, वैदेही चौधी, प्रार्थना थोंबारे और पुरुष खिलाड़ी मानस धामने को साई की समीक्षा में टीम से बाहर कर दिया गया। टेनिस महासंघ (आईटा) ने एशियाड के लिए 12 सदस्यी टीम चुनी थी, लेकिन मंजूरी सात को दी गई है। वहीं महिला एशिया कप रोइंग में पदक जीतने वाली दिलजोत कौर, सुमन देवी के अलावा भारती देवी को दल से बाहर किए जाने पर रोष है। ताइक्वांडो में पुरुष टीम को बाहर कर दिया गया है। आईओए 36 खेलों की मंजूरी मांगी थी, लेकिन साई ने चार सदस्यी सर्फिंग टीम को रोक दिया है। इससे पहले साई ने अपनी प्रारंभिक समीक्षा में मॉडर्न पेंटाथलन (4) और ट्रायथलन (4) का नाम भी काट दिया था। टेनिस खिलाडिघ्यों के नाम प्रारंभिक समीक्षा में ही कटे हैं। इस दौरान साई ने 85 से अधिक खिलाडिघ्यों को मंत्रालय की चयन नीति के खिलाफ पाते हुए उनका नाम काटा था।

खुद पर नहीं ले सकते तो दूसरों से मत कहो, यशस्वी-असिथा की भिड़ंत पर क्यों भड़के जडेजा ?

कोलंबो,एजेंसी। भारत और श्रीलंका के बीच कोलंबो में दूसरे टेस्ट के पहले दिन यशस्वी जायसवाल एक ऑन–फील्ड विवाद में फंस गए। श्रीलंका के तेज गेंदबाज असिथा फर्नांडो ने जायसवाल को आउट करने के बाद उन्हें सेंड–ऑफ दिया। यह बात भारतीय बल्लेबाज को पसंद नहीं आई और पवेलियन की ओर लौटते हुए वह वापस मुड़े और फर्नांडो से बहस करने लगे। दोनों खिलाड़ियों के बीच कुछ देर तक तीखी नोकझोंक हुई। मामला इतना बढ़ गया कि दोनों आमने–सामने आ गए और उनके सिर भी टकराए। इसके बाद दोनों के बीच धक्का देने की स्थिति भी बनी। श्रीलंका के खिलाड़ियों ने तुरंत हस्तक्षेप किया और दोनों को अलग किया। इस घटना पर पूर्व भारतीय ऑलराउंडर अजय जडेजा ने यशस्वी जायसवाल के रवैये पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि मैदान पर मजाक और स्लेजिंग तब तक ठीक है, जब तक भाषा और व्यवहार की सीमा न लांघी जाए। जडेजा ने सोनी स्पोर्ट्स पर कहा, यह खतरनाक स्थिति है। इसमें कोई संदेह नहीं है। शारीरिक संपर्क एक अलग बात है। पिछले मैच में जायसवाल दूसरी तरफ थे। वह फील्डिंग कर रहे थे और उन्होंने निरोशन डिकवेला से कुछ कहा था। तब हमने कहा था कि मैदान पर मजाकिया नोकझोंक अच्छी है, जब तक आपकी भाषा में कुछ गलत न हो। उन्होंने आगे जायसवाल को एक सीधी सीख देते हुए कहा, श्अगर कोई व्यक्ति खुद पर हंस नहीं सकता, तो उसे दूसरों पर भी नहीं हंसना चाहिए। अगर आप किसी बात को खुद पर नहीं ले सकते, तो मैदान पर वह बात दूसरों से भी नहीं कहनी चाहिए।

भारतीय बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक ने भी माना कि जायसवाल को फर्नांडो के इतने करीब नहीं जाना चाहिए था। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे मामले मैच के तनावपूर्ण माहौल में अचानक हो सकते हैं। दिन का खेल खत्म होने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कोटक ने कहा, मुझे लगता है कि गेंदबाज ने कोई टिप्पणी की होगी और संभव है कि वह बात उस समय की गर्मी में कही गई हो। जाहिर तौर पर मुझे नहीं लगता कि जायसवाल को इतनी करीब जाना चाहिए था, लेकिन मैच की गर्मी में ऐसी चीजें हो जाती हैं। यह विवाद भारत की पारी के 17वें ओवर में हुआ। फर्नांडो के ओवर में जायसवाल ने लगातार तीन चौके लगाए थे। हालांकि, ओवर की आखिरी गेंद पर श्रीलंकाई तेज गेंदबाज ने भारतीय सलामी बल्लेबाज को आउट कर दिया। विकेट लेने के बाद फर्नांडो ने जायसवाल को सेंड–ऑफ दिया, जिसके बाद भारतीय बल्लेबाज वापस मुड़े और दोनों के बीच बहस शुरू हो गई। कुछ ही क्षणों में मामला आमने–सामने आने और शारीरिक संपर्क तक पहुंच गया। श्रीलंका के कप्तान धनंजय डी सिल्वा ने बीच में आकर स्थिति को शांत कराया। घटना में शारीरिक संपर्क होने के कारण इस विवाद पर आगे कार्रवाई की संभावना भी बनी हुई है। जडेजा की टिप्पणी ने बहस को एक और दिशा दे दी है कि क्या मैदान पर आक्रामकता और जुनून की भी एक सीमा होनी चाहिए? जायसवाल पहले भी मैदान पर अपनी आक्रामक बॉडी लैंग्वेज और जवाब देने वाले अंदाज के लिए चर्चा में रहे हैं। ऐसे में दूसरे टेस्ट के दौरान हुई यह घटना एक बार फिर खिलाड़ियों के व्यवहार और खेल भावना पर बहस छेड़ रही है।

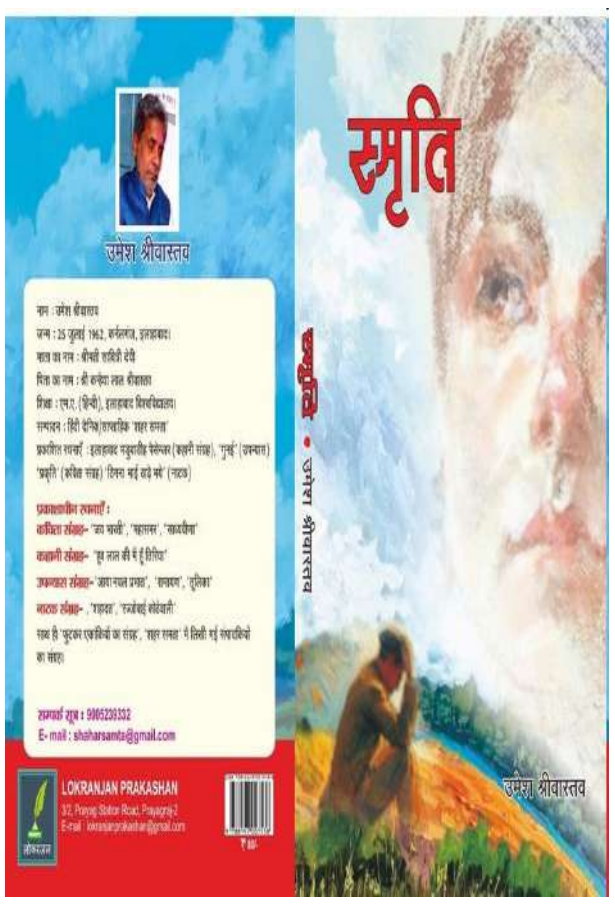

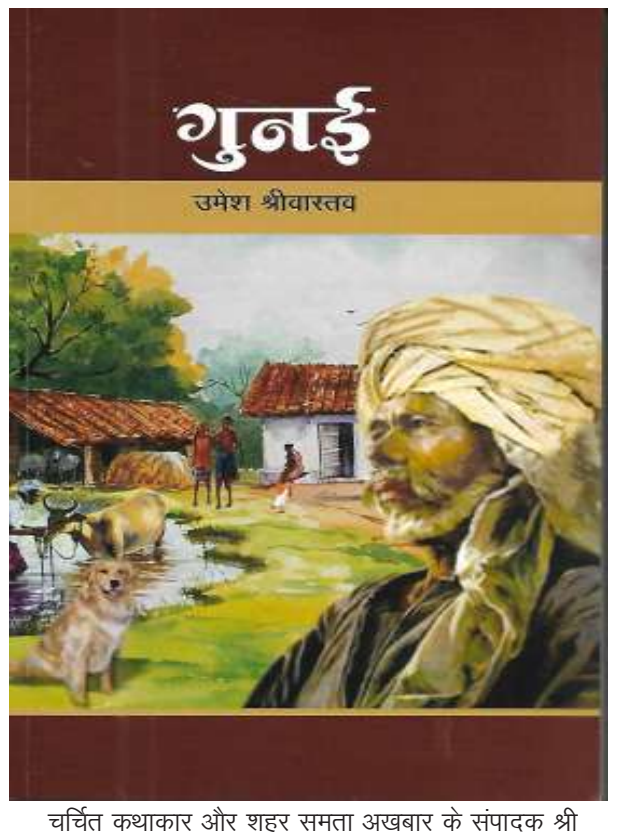

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

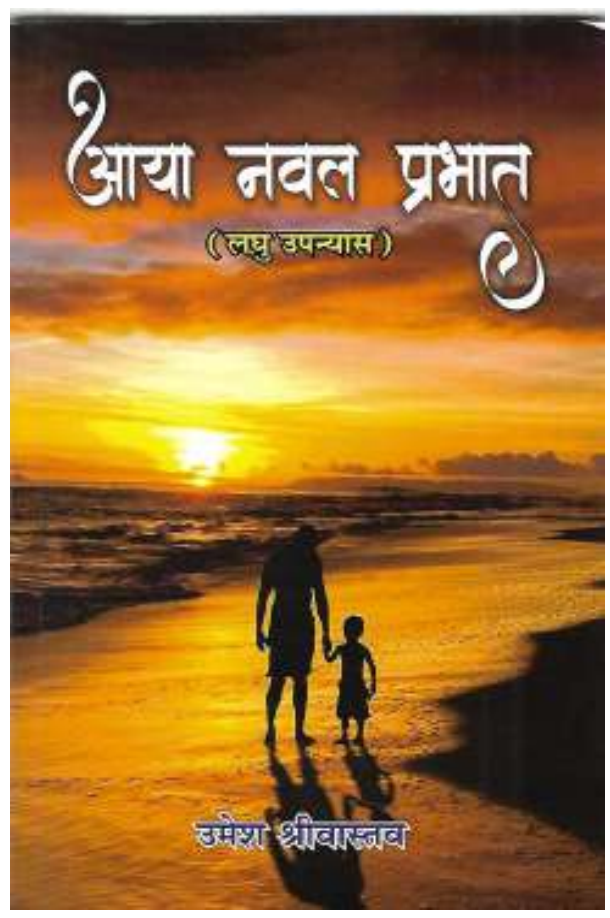

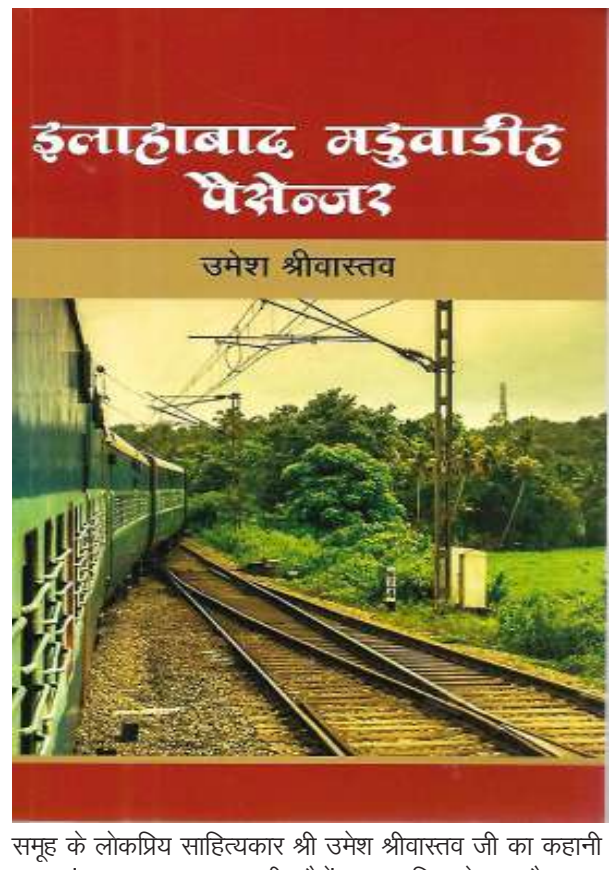

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

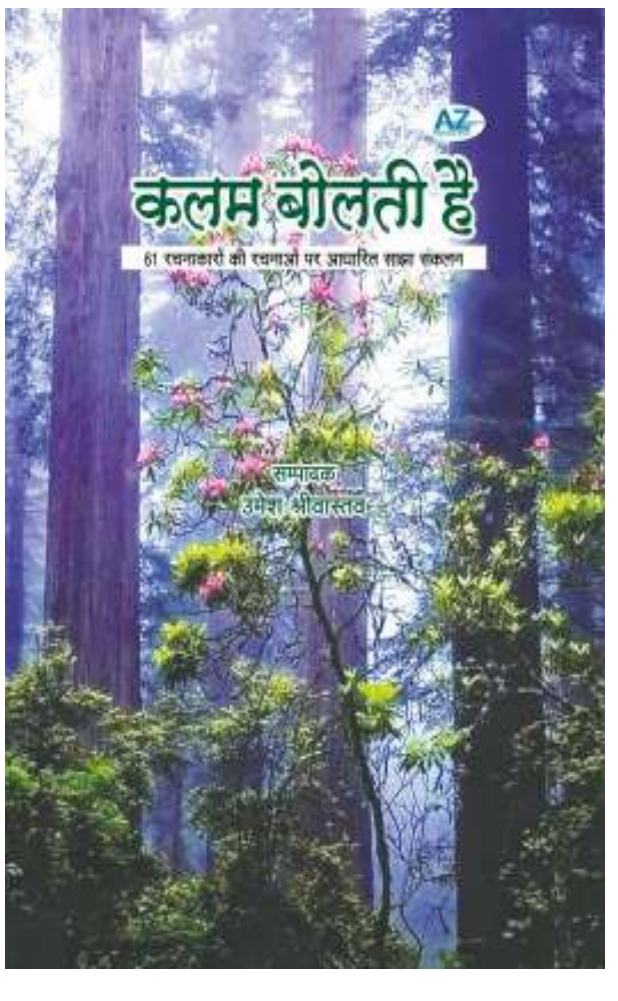

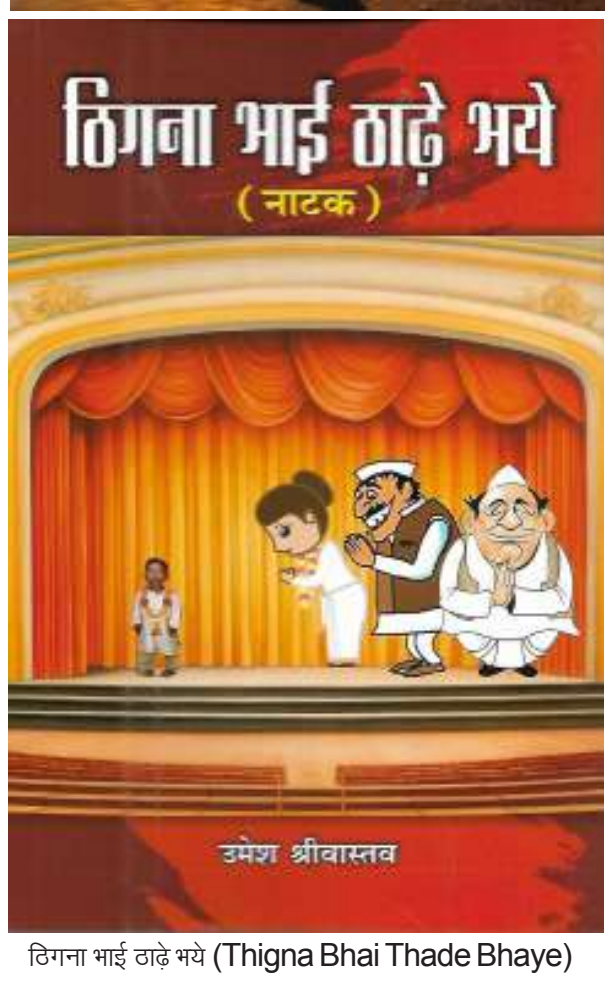

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

विशेषज्ञ का खुलासा: ईरान ने 40 साल पहले ही शुरू कर दी थी अमेरिका से युद्ध की तैयारी, बनाई थी रणनीति

वाशिंगटन, एजेंसी। भारत के सेवानिवृत्तलेफ्टिनेंट जनरल केजेएस ढिल्लों ने कहा कि ईरान पिछले चार दशक से अमेरिका के साथ संभावित युद्ध की तैयारी कर रहा था। उसने

शीर्ष नेतृत्व के खत्म होने जैसी स्थिति से निपटने की योजना भी बनाई थी। इससे विरोधियों के लिए पूरे ईरान की सैन्य क्षमता को खत्म करना मुश्किल रहा। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन अमेरिका के कार्यक्रम में पूर्व सैन्य खुफिया प्रमुख ढिल्लों ने कहा, ईरान ने अपनी सेना को 31 स्वतंत्र मुख्यालयों में बांटने वाली रणनीति अपनाई। इसके तहत केंद्रीय नेतृत्व खत्म होने पर भी अलग-अलग सैन्य इकाइयां काम करती रह सकती हैं। ढिल्लों के मुताबिक, ईरान का पहाड़ी भूगोल भी उसके लिए बड़ा सुरक्षा कवच है। ऐसे इलाके में जमीनी हमला करना बेहद मुश्किल है। गर्मियों में ईरान के अंदर तापमान 55 से 60 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। होर्मुज की सुरक्षा पर विशेष ध्यान ढिल्लों ने कहा, ईरान के पास अमेरिका को समुद्र में सीधे चुनौती देने के लिए विमानवाहक पोत या मजबूत वायुसेना नहीं है। इसलिए उसने होर्मुज की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया है। इसके लिए स्पीड बोट, समुद्री बारूदी सुरंगें, टॉरपीडो नौकाएं, तटीय तोपें, मिसाइल और ड्रोन जैसी क्षमताएं विकसित की गई हैं। अमेरिका और ईरान के बीच तनाव रविवार को और बढ़ गया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर साझा करते हुए रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण होर्मुज को नया अमेरिकी क्षेत्र बताया। इस पर ईरान की ओर से कड़ी प्रतिक्रिया सामने आई है। ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव मोहसिन रजाई ने कहा अमेरिका जब तक अपना रुख नहीं बदलता, तब तक यह समुद्री रास्ता बंद रहेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने 18 अगस्त को भी ऐसी ही तस्वीर साझा की थी। इससे पहले 14 अगस्त को लॉन्ग आइलैंड में पुलिस अकादमी के कार्यक्रम में उन्होंने कहा था कि वह जल्द होर्मुज को अमेरिका का क्षेत्र घोषित कर सकते हैं।

ईरान के खिलाफ अमेरिका का 'इकोनॉमिक डी-डे': तेहरान बोला- नहीं जाने देंगे तेल की एक भी बूंद

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने रविवार को कहा कि ट्रंप प्रशासन ईरान के खिलाफ अपने अभियान के 'आखिरी चरण' में प्रवेश कर रहा है। उन्होंने ईरान की आर्थिक जीवन-रेखाओं को काटने के मकसद से 'इकोनॉमिक डी-डे' शुरू करने की घोषणा की। बेसेंट के मुताबिक, यह किसी दुश्मन देश के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय हमला होगा। एक्स पर एक पोस्ट में बेसेंट ने कहा, राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान की सैन्य क्षमताओं को खत्म कर दिया है, उसकी लगभग 100 प्रतिशत सैन्य फैक्ट्रियों को नष्ट कर दिया है और उसके परमाणु कार्यक्रम को खत्म कर दिया है। अब हम आखिरी चरण में प्रवेश कर रहे हैं। सुबह एक आर्थिक डी-डे की शुरुआत होगी यह किसी दुश्मन के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय हमला होगा। 'सुरक्षा गारंटी' को लेकर ईरान पर गंभीर आरोप बेसेंट ने ईरान पर सुरक्षा गारंटी का इस्तेमाल 'वसूली' के तौर पर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि तेहरान इस धारणा पर टिका हुआ था कि ईरानी जवाबी कार्रवाई तय है, जबकि अमेरिका की सख्ती पर बातचीत की जा सकती है। इस्लामिक रिपब्लिक ने वसूली को सुरक्षा गारंटी का रूप देकर अपना अस्तित्व बनाए रखा है। इसे इस सोच से ताकत मिली है कि ईरानी जवाबी कार्रवाई तो तय है और अमेरिकी सख्ती पर बातचीत की जा सकती है। राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल में वह दौर खत्म हो गया है। और जो लोग तेहरान का विरोध करने के खतरे से डरते हैं, उन्हें वॉशिंगटन को आजमाने की कीमत को कम नहीं आंकना चाहिए। 'हर एजेंसी और हर अधिकार का इस्तेमाल होगा' बेसेंट ने कहा कि ट्रंप ने अमेरिकी सरकार के लिए ईरान के खिलाफ अपनी सभी शक्तियों का इस्तेमाल करने की परिस्थितियां तैयार कर दी हैं। राष्ट्रपति ने हर एजेंसी, हर अधिकार और ऐसी कार्रवाई का इस्तेमाल करने की परिस्थितियां बना दी हैं, जिनके बारे में कई लोगों को लगता था कि हम कभी उनका इस्तेमाल नहीं करेंगे। हमारा मकसद उस अत्याचारी शासन को बनाए रखने वाली हर आर्थिक जीवन-रेखा को काटना है, ताकि तेहरान अकेला पड़ जाए। इस बीच, ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव मोहसेन रेजाई ने सोमवार को चेतावनी दी कि अगर ईरान के खिलाफ अमेरिका का 'आर्थिक युद्ध' जारी रहता है, तो तेहरान होर्मुज जलडमरूमध्य और फारस की खाड़ी में अन्य जगहों से तेल का पूरा निर्यात रोक सकता है। रेजाई ने एक्स पर एक पोस्ट में यह भी चेतावनी दी कि तेहरान के खिलाफ अमेरिकी आर्थिक अभियान का समर्थन करने या उसमें भाग लेने वाले किसी भी देश के कदम को ईरान 'युद्ध की कार्रवाई' मानेगा।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

'खून बहता रहा तो बदल जाएगा नक्शा': आसिम मुनीर को पाकिस्तानी सांसद ने दिखाया आईना, 1971 के जंग की दिलाई याद

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के वरिष्ठ नेता और जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम (फ) के प्रमुख मौलाना फजलुर रहमान ने पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर और सैन्य प्रतिष्ठान पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने 1971 में ढाका में पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण का हवाला देते हुए कहा कि अतीत में भी ताकत और आखिरी दम तक लड़ने के बड़े दावे किए गए थे, लेकिन उनका परिणाम पाकिस्तान की हार के रूप में सामने आया। रहमान ने लंबे समय से जारी हिंसा और दमन को भविष्य में संभावित भौगोलिक बदलाव से जोड़ते हुए आम जनता की परेशानियों पर भी सवाल उठाए। साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि संसद और संघीय सरकार की शक्तियां एक व्यक्ति के हाथों में केंद्रित की जा रही हैं और विपक्ष से संसद के भीतर एकजुट होकर इसका विरोध करने की अपील की। आसिम मुनीर के शक्ति प्रदर्शन पर उठाए सवाल पेशावर में JUI-F के एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए रहमान ने

सैन्य प्रतिष्ठान की ओर से बार-बार किए जाने वाले ताकत के दावों और आक्रामक रुख पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि देश के आम लोग गंभीर परेशानियों से गुजर रहे हैं और ऐसे हालात में सत्ता की ताकत का प्रदर्शन किस काम का है। पाकिस्तान के शीर्ष सैन्य नेतृत्व पर सीधा निशाना साधते हुए श्रन्-थ प्रमुख ने कहा, श्हम इस देश के रक्षक हैं। किसी के बाप में भी इस देश को नुकसान पहुंचाने की ताकत नहीं है। मैं मानता हूं कि आप बहुत शक्तिशाली हैं।श हालांकि, उन्होंने सवाल उठाया कि क्या इस तरह की ताकत के दावे देश को अंदरूनी उथल-पुथल और बढ़ते जन असंतोष से बचा सकते हैं। 1971 की जंग और ढाका में आत्मसमर्पण का जिक्र फजलुर रहमान ने मौजूदा दौर में पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व की ओर से दिए जा रहे बयानों की तुलना 1971 के युद्ध के घटनाक्रम से की। उन्होंने याद दिलाया कि उस समय भी पाकिस्तानी सेना की ओर से आखिरी दम तक लड़ने के बड़े-बड़े दावे किए गए थे, लेकिन निर्णायक स्थिति आने पर ढाका में आत्मसमर्पण करना पड़ा था। दिसंबर 1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच चला 13 दिनों का युद्ध 16 दिसंबर को ढाका में करीब 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त हुआ था। इस हार के बाद पाकिस्तान का पूर्वी हिस्सा उससे अलग हो गया और अंततः बांग्लादेश का गठन हुआ। 'हम ये बड़ी-बड़ी बातें पहले भी सुन चुके हैं'

रहमान ने तत्कालीन पाकिस्तानी राष्ट्रपति और सैन्य शासक जनरल याह्या खान के उन बयानों को भी याद किया, जो आत्मसमर्पण से ठीक पहले दिए गए थे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान का सैन्य प्रतिष्ठान अतीत में भी इसी तरह के बड़े दावे कर चुका है, लेकिन जब हालात निर्णायक मोड़ पर पहुंचे तो वे दावे जमीन पर टिक नहीं सके। मुझे याद है और शायद कुछ बुजुर्गों को भी याद होगा कि दिसंबर 1971 में हथियार डालने से एक दिन पहले जनरल याह्या खान ने सेना को संबोधित करते हुए कहा था, 'हम सड़कों पर लड़ेंगे, रेगिस्तानों में लड़ेंगे, खेतों में लड़ेंगे, कारखानों में लड़ेंगे, पहाड़ों में लड़ेंगे और उनसे लड़ेंगे। हम लड़ेंगे।' हमने उस समय भी ये बड़ी-बड़ी बातें सुनी थीं। 'देश और जनता को क्यों परीक्षा में डाल रहे हैं?' JUI-F प्रमुख ने पाकिस्तान में आम लोगों की बदहाली का मुद्दा उठाते हुए सैन्य प्रतिष्ठान से सवाल किया कि आखिर देश की जनता को लगातार मुश्किल हालात में क्यों धकेला जा रहा है। आप देश और लोगों को परीक्षा में क्यों डाल रहे हैं? जब आपकी जनता परेशान है तो आप यह तमाशा क्यों कर रहे हैं? पाकिस्तान और पूरे क्षेत्र में लंबे समय से संघर्ष, हिंसा और खून-खराबे का दौर जारी है और इसके भविष्य में गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं। क्षेत्र में लंबे समय से जारी संघर्ष और रक्तपात का उल्लेख करते हुए फजलुर रहमान ने कहा कि इसकी शुरुआत के बाद कई दशक बीत चुके हैं,

लेकिन हिंसा का सिलसिला थमा नहीं है। जब 1989 में अफगानिस्तान में क्रांति आई और युद्ध शुरू हुआ 45-46 साल हो गए हैंय करीब आधी सदी से खून बह रहा है। जब इस तरह खून बहता है, तो यह भौगोलिक बदलाव का संकेत होता है। अगर यह दमन का संकेत है, तो कम से कम हमें अपने इरादों के बारे में बता दीजिए। हम इसे सहन कर रहे हैं और आगे भी सहते रहेंगे। फजलुर रहमान ने आसिम मुनीर पर एक और गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि संसद और संघीय सरकार के अधिकारों को कथित तौर पर एक व्यक्ति के हाथों में केंद्रित कर दिया गया है। आप सेना प्रमुख हो सकते हैं, चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज हो सकते हैं, फील्ड मार्शल भी हो सकते हैं हमें इससे कोई आपत्ति नहीं है।

लेकिन जिन शक्तियों का अधिकार संसद के पास होना चाहिए, उन्हें प्रतिष्ठान में बैठे एक व्यक्ति के हाथों में सौंप दिया गया है। JUI-F प्रमुख ने आशंका जताई कि भविष्य में कानून बनाने और संविधान में संशोधन करने की प्रक्रिया में संसद को किनारे किया जा सकता है। सत्ता के ढांचे में ऐसा बदलाव लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए गंभीर चिंता का विषय है। सरकार को अपने रास्ते पर लाना और उसे अपने बूट के नीचे रखना उनके लिए शायद ज्यादा आसान हो सकता है। रहमान ने आगे कहा,श्और वे कहते हैं कि अगर कोई फैसला करना है तो संघीय सरकार करेगी यानी इसमें संसद को भी दरकिनार कर दिया गया है।

अमेरिकी जेन-जी ज्यादा आक्रामक: भाषण पसंद न आने पर वक्ता को जबरन रोकने के समर्थक, हिंसा से भी परहेज नहीं

वाशिंगटन, एजेंसी। लोकतंत्र का बुनियादी नियम यही माना जाता है कि असहमति का जवाब बहस से दिया जाए, न कि जबर्दस्ती या हिंसा से। लेकिन अमेरिका में यह सोच अब धूमिल पड़ती नजर आ रही है। एक नए शोध में सामने आया है कि पुरानी पीढ़ी की तुलना में जेन-जी में राजनीतिक सहनशीलता घट रही है। नई पीढ़ी सार्वजनिक मंच पर किसी वक्ता का भाषण पसंद न आने पर उसे रोकने के लिए चीखने-चिल्लाने, नारेबाजी करने और यहां तक कि हिंसा का सहारा लेने को भी गलत नहीं मानती। पॉलिटिकल साइंस एंड पॉलिटिक्स प्रकाशित केविन जे वॉलस्टेन का यह अध्ययन बताता है कि अभिव्यक्ति की आजादी पर अमेरिकी युवाओं का नजरिया तेजी से बदल रहा है। नतीजे बताते हैं कि युवा

पीढ़ी अभिव्यक्ति की आजादी का समर्थन तो करती है, लेकिन जब बात उनके विचारों के विपरीत या आपत्तिजनक मुद्दों की आती है तो सहनशीलता दिखाने के बजाय सामने वाले को चुप कराने में विश्वास रखते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सामान्य मुद्दों पर उदारवादी और रुढ़िवादी दोनों के विचारों में थोड़ा-बहुत अंतर पाया गया। लेकिन नस्ली भेदभाव या आपत्तिजनक बयान देने वालों को जबरन रोकने पर दोनों समान रूप से सहमत दिखे। अध्ययन के दौरान यूनिवर्सिटी जाने वाले और कम पढ़े-लिखे युवाओं की राय भी समान रही। ऐसे में इस अध्ययन को नजरिये में पीढ़ीगत बदलाव का संकेत माना जा रहा है। युवा उदारवादियों ने उग्र तरीकों का सबसे अधिक साथ दिया शोध के दौरान जब बिना कोई खास मुद्दा बताए सामान्य सवाल पूछा गया तो जेन-जी पुरानी पीढ़ियों की तुलना में नारेबाजी करने, रास्ता रोकने और हिंसा का उपयोग करने के प्रति अधिक सहज और सहमत दिखे। मुद्दा स्पष्ट तय न होने पर युवा उदारवादियों ने रूढ़िवादियों की तुलना में वक्ताओं को रोकने के लिए उग्र तरीकों का ज्यादा समर्थन किया। दो अलग स्थितियों के आधार पर जानी गई राय राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि सर्वेक्षण में सटीक नतीजे पाने के लिए प्रतिभागियों के समूह के सामने दो अलग-अलग स्थितियों को रखकर उनकी राय जानने की कोशिश की गई। पहले समूह से सामान्य तौर पर पूछा गया कि क्या वक्ताओं को रोकना या हिंसा सही है? वहीं, दूसरे समूह से पहले उनका सबसे नापसंद विचार चुनने को कहा गया और फिर उस विचार का प्रचार करने वाले वक्ता को रोकने के तरीकों पर राय मांगी गई। इसमें विरोध के तीन मुख्य तरीकों-हंगामा करके आवाज दबाने, रास्ता रोकने और हिंसा का सहारा लेने पर लोगों की स्वीकृति का स्तर मापा गया।

जापानी कंपनियों की पहली पसंद भारत, फिर भी कारखाने थाईलैंड में ज्यादा, क्या है रणनीति ?

एजेंसी/जापान के लिए भारत कागज पर पहली पसंद है, कारखाने के लिए थाईलैंड। जापानी कंपनियों की पसंद में भारत भले 61.8ः वोट के साथ पसंदीदा ठिकानों की सूची में लगातार चौथे साल शीर्ष पर है, पर जापानी कंपनियां भारत में 1400 हैं जबकि थाईलैंड में छह हजार। 11 साल में निवेश का लक्ष्य 3. 5 लाख करोड़ येन (2.10 लाख करोड़ रुपये) से बढ़कर 10 लाख करोड़ येन (6 लाख करोड़ रुपये) हो गया, कंपनियों की गिनती नहीं बढ़ी। रकम के वादे काम नहीं आए, इसलिए इस बार सरकार 220 भारतीय उद्योगपतियों को सीधे जापानी कारखानों के दरवाजे पर ले जा रही है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के नेतृत्व वाला यह दल सोमवार से 27 अगस्त तक जापान में रहेगा। रणनीति दौरे के नक्शे से समझ आती है। पैसा टोक्यो में है, पर कारखाना लगाने वाली कंपनियां वहां नहीं हैं। जापान की असली विनिर्माण ताकत आइची और कंसाई की उन हजारों मझोली कंपनियों में है, जो बड़ी कंपनियों को कलपुर्जे देती हैं। कोई जापानी कंपनी जब कहीं जाती है, तो आपूर्तिकर्ताओं का पूरा झुंड साथ ले जाती है। इसीलिए भारत पहली बार इंतजार के बजाय खुद उनके पास गया है। भारतीय दल नागोया में चुकेइरेन व नागोया चौंबर के साथ रोड शो करेगा, ओसाका व क्योटो में क्षेत्रीय उद्योग से जुड़ेगा। इस कार्यक्रम में मशीन को समझने या जानने पर जोर है। सेमीकंडक्टर, एआई और इलेक्ट्रॉनिक्स पर एक गोलमेज बैठक है, पूंजीगत वस्तुओं, मशीनरी और वाहन उद्योग पर दूसरी। दौरे का मकसद दोतरफा निवेश बढ़ाना है। इसी क्रम में भारतीय कंपनियों का जापान जाना भी अहम है, जहां अभी सिर्फ 100 भारतीय कंपनियां हैं। दल में रिलायंस के औद्योगिक नगर मेट सिटी के प्रमुख हैं, जो जापानी कंपनियों को जमीन बेचते हैं। मारुति सुजुकी है, गुजरात राज्य उर्वरक एवं रसायन है, बीमा व संपत्ति प्रबंधन कंपनियां हैं, जो जापान की सस्ती पेंशन पूंजी की तलाश में हैं, और स्टार्टअप का पूरा जत्था है, जिसके लिए टोक्यो में अलग बैठक होगी। आरपीजी समूह के उपाध्यक्ष अनंत गोयनका, एसोचैम से निर्मल कुमार मिंडा, टीसीआई के विनीत अग्रवाल, रिन्यू पावर के सुमंत सिन्हा, किर्लोस्कर सिस्टम्स की गीतांजलि विक्रम किर्लोस्कर, एडवर्ब टेक के जलज दानी, कार्स24 के विक्रम चोपड़ा, गुजरात राज्य उर्वरक एवं रसायन के राजेंद्र कुमार, मारुति सुजुकी के राहुल भारती, मोबिक्विक की उपासना टाकू, न्यूस्पेस रिसर्च के जूलियस अमृत, निप्पॉन लाइफ इंडिया एसेट मैनेजमेंट के संदीप सिक्का, रिलायंस मेट सिटी के श्रीवल्लभ गोयल, स्नैबिट के आयुष अग्रवाल, स्टार यूनियन दाई-इची लाइफ के अभय तिवारी और एसपीएफ की श्वेता राजपाल कोहली। वाहन, वाहन कलपुर्जे, अभियांत्रिकी, रसायन, पेट्रो रसायन, तकनीक और स्टार्टअप, यानी हर क्षेत्र से नाम हैं।

थाईलैंड के तीन प्रांतों में हिंसा, प्रधानमंत्री अनुतिन ने बुलाई आपात बैठकय क्या है पूरा मामला?

बैंकॉक, एजेंसी। थाईलैंड के प्रधानमंत्री अनुतिन चार्नविराकुल ने रविवार को वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारियों के साथ आपात बैठक की। देश के उत्तर में पहले से ही बाढ़ का संकट बना हुआ है। इसी बीच, दक्षिण के तीन प्रांतों में रातभर एक साथ हिंसा हुई। इन इलाकों में कुछ मुस्लिम विद्रोही संगठन सरकार के खिलाफ लड़ रहे हैं और अपने इलाके के लिए अलग शासन की मांग कर रहे हैं। पीएम अनुतिन ने क्यों बुलाई गई बैठक? अनुतिन के उत्तर की ओर रवाना होने से कुछ समय पहले यह बैठक हुई। उन्हें बुरी तरह बाढ़ प्रभावित नान प्रांत का जायजा लेना था। बैठक शनिवार रात दक्षिण के सबसे आखिरी तीन प्रांतों में हुई 51 घटनाओं के बाद बुलाई गई। इनमें नाराथिवाट, पट्टानी और याला शामिल हैं। हमलावरों का सेना या पुलिस से कोई सामना नहीं हुआ। अब तक सिर्फ तीन नागरिकों के घायल होने की जानकारी है। रविवार को बताया गया कि तीनों की हालत में सुधार हो रहा है। हिंसा में मुख्य रूप से छोटे बमों का इस्तेमाल हुआ। आगजनी की गई। संपत्तियों को भी नुकसान पहुंचाया गया। सबसे बड़ा निशाना पट्टानी का 7-इलेवन स्टोर था। सोशल मीडिया पर चल रहे एक वीडियो में हथियारबंद लोग स्टोर के बाहर घूमते दिखे। ग्राहक और कर्मचारी वहां से भागते नजर आए। इसके बाद स्टोर में आग लगा दी गई। नाराथिवाट में एक बम से रेल की पटरियां क्षतिग्रस्त हो गईं। इसके कारण स्थानीय और लंबी दूरी की रेल सेवाएं रोकनी पड़ीं। सुरक्षा की स्थिति साफ नहीं होने के कारण यह पता नहीं चल पाया कि सेवाएं कब फिर शुरू होंगी। ऐसी घटनाओं में अक्सर तुरंत किसी संगठन पर सार्वजनिक रूप से आरोप नहीं लगाया जाता। इस बार भी किसी संगठन ने तुरंत हमलों की जिम्मेदारी नहीं ली। हमलों के पीछे बीआरएन को क्यों माना जा रहा है? हालांकि, आमतौर पर माना जाता है कि ऐसे हमले बारिसान रिवोलुसी नेशनल मेलायु पटानी यानी बीआरएन करता है। यह दक्षिण का प्रमुख विद्रोही संगठन है। उसके पास ऐसी कार्रवाई करने के लिए संगठन और समर्थन दोनों हैं। यही वह संगठन है, जिसके साथ थाई सरकार समय-समय पर शांति वार्ता करती रही है। थाईलैंड में ज्यादातर लोग बौद्ध हैं।

अमेरिका के जंगल में लगी भीषण आग, हजारों एकड़ इलाका खाक, 42 हजार लोगों को इलाका खाली करने के निर्देश

वॉशिंगटन, एजेंसी। नेवाडा-कैलिफोर्निया बॉर्डर के पास उत्तर-पश्चिमी नेवाडा के शहर रेनो की ओर जंगल की आग तेजी से फैल रही है। अधिकारियों के मुताबिक आग की वजह से कम से कम छह लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि करीब 42,000 लोगों को इलाका छोड़ने का आदेश दिया गया है। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, यह आग शनिवार को शुरू हुई थी। अग्निशमन अधिकारियों ने रविवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि आग अब तक 13,000 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में फैल चुकी है। आग अभी तक पूरी तरह नियंत्रण से बाहर है। आग से छह लोग घायल अधिकारियों ने कहा कि घायलों में तीन आम नागरिक और तीन आपातकालीन सेवा कर्मी शामिल हैं। इसके अलावा, लगभग 45,000 लोग ऐसे क्षेत्र में हैं जहां उन्हें किसी भी समय इलाके को खाली करने की चेतावनी दी जा सकती है। अधिकारियों ने यह भी पुष्टि की कि आग में कई इमारतें और ढांचे नष्ट हो चुके हैं। रविवार को वाशो काउंटी में करीब 10,000 बिजली उपभोक्ता बिना बिजली के थे। रेनो, वाशो काउंटी का मुख्य शहर और सबसे अधिक आबादी वाला इलाका है। तेज हवाओं ने बढ़ाई परेशानी अधिकारियों के अनुसार, आग का व्यवहार बेहद खतरनाक और असामान्य देखा गया है। तेज हवाओं के कारण आग सूखी और आसानी से जलने वाली वनस्पतियों में बहुत तेजी से फैल रही है। नेवादा के गवर्नर जो लोम्बार्डो ने शनिवार रात वाशो काउंटी में आपातकाल की घोषणा कर दी। लोम्बार्डो ने एक बयान में कहा, श्यह स्थिति लगातार बदल रही है और बहुत तेजी से विकसित हो रही है। मैं प्रभावित इलाकों में रहने वाले सभी लोगों से सतर्क रहने और स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों का पालन करने की अपील करता हूं। राज्य सरकार पूरी तरह सक्रिय है और हम स्थानीय प्रशासन तथा राहतकर्मियों के साथ मिलकर लोगों की जान बचाने, समुदायों की सुरक्षा करने और नागरिकों को खतरे से दूर रखने के लिए हर संभव संसाधन लगा रहे हैं। प्रशासन ने लोगों को चेताया गवर्नर ने रविवार सुबह सोशल मीडिया पर फिर चेतावनी देते हुए कहा कि आग से जुड़ी स्थिति अभी भी तेजी से बदल रही है। उन्होंने कहा कि यदि आप प्रभावित क्षेत्रों में हैं, तो सतर्क रहें और लगातार नई जानकारी लेते रहें। इससे पहले जुलाई में, दक्षिणी कैलिफोर्निया में लगी एक जंगल की आग तेजी से फैलकर लगभग 2,700 एकड़ तक पहुंच गई थी। भीषण गर्मी की लहर के बीच इस आग के कारण लोगों को अपने घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ा था।

पूर्व PM इमरान खान की जांच पर सवाल: PTI ने पूछा- एंजियोग्राफी क्यों नहीं हुई? शिफा अस्पताल की मांग दोहराई

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने पूर्व प्रधानमंत्री और पार्टी संस्थापक इमरान खान की स्वास्थ्य जांच को लेकर सरकार पर सवाल उठाए हैं। पार्टी ने मांग की है कि इमरान खान की ब्र कोरोनरी एंजियोग्राफी शिफा इंटरनेशनल अस्पताल में कराई जाए।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।